

# देषबन्धु

वर्ष - 8 | अंक-196 | सागर, सोमवार, 4 सितंबर 2023 | पृष्ठ - 8 | मूल्य - 3.00 रुपए

माफियों ने काट डाले सागौन के हरे वृक्ष, वन विभाग को नहीं फिर

पृष्ठ 3

इंडिया की सफलता से बौखलाया मीडिया केरल ने स्टाटाज की केन्द्र की स्मार्ट मीटर योजना

पृष्ठ 4

2 मजदूरों ने 12 दिनों में बना दिया डग प्लाईट

पृष्ठ 6

विजली कटौती से जनता परेशान

पृष्ठ 7

## मुख्यमंत्री ने अधिकारियों के साथ की उच्च स्तरीय बैठक, कहा- अल्पवर्षा से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने पूरी ताकत से काम करेंगे



**भोपाल, देशबन्धु।** मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि अल्पवर्षा के कारण प्रदेश में खरीफ फसलों के बचाने, बिजली की बढ़ती मांग, ग्रामीण युवाओं को रोजगार देने और पेयजल की व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से जारी रखने की संभावित चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए राज्य सरकार पूरी ताकत से काम करेगी। संकट की इस चड़ियों में राज्य सरकार पूरी तरह किसानों के साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा है कि वे भगवान महाकाल से प्रार्थना करने कल उज्जैन जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान आज निवास कार्यालय स्थित समल भवन में अल्पवर्षा की स्थिति से निपटने के लिए आयोजित उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैस तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि अगस्त माह में वर्षा बहुत कम हुई है। अल्पवर्षा के कारण फसलों प्रभावित हो रही हैं। खरीफ की फसलों संकट में हैं। इस संकट की स्थिति से निपटने के लिए पूरी ताकत से काम करेंगे। बिजली की डिमांड भी बढ़ गई है। इसके लिए बेहतर व्यवस्था भी करेंगे। डेम से पानी छोड़कर फसलों को बचाया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ग्रामीण युवाओं को रोजगार देने की व्यवस्था पर भी ध्यान दिया जाता रहेगा। पेयजल और निस्तार के पानी की व्यवस्था करेंगे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जल उपयोगिता समिति की बैठक जल्द कर लें। जहां पानी उपलब्ध है वहां डेम से पानी छोड़ने की व्यवस्था करें। डेमों का परीक्षण कर लें। डेमों में अभी कितना पानी उपलब्ध है, इसकी जानकारी भी लें। जिला प्रशासन को आवश्यक निर्देश दिए जाएं। किसानों को सिंचाई के संबंध में एडवाइजरी जारी करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि बिजली की बेहतर व्यवस्था करें।

- रह दिए निर्देश**
- किसानों को सिंचाई के लिए पामर्श जारी करें
  - फसलों को बचाने के लिए डेम से पानी छोड़ें
  - ग्रामीण युवाओं को रोजगार दें

## एक देश-एक चुनाव पर बोले राहुल- यह भारतीय संघ पर हमला है

**नई दिल्ली, एजेंसी।** 'एक देश-एक चुनाव' के मुद्दे पर राजनीति गरमा गई है। इस मुद्दे पर राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि 'इंडिया यानी भारत, यह राज्यों का संघ है। 'वन नेशन-वन इलेक्शन' का आईडिया संघ और राज्यों पर हमला है। सरकार का यह कदम पूरी तरह से देश की संघीय प्रणाली के विरुद्ध है। वहीं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक्स पर लिखा कि मोदी सरकार चाहती है कि लोकतांत्रिक भारत धीरे-धीरे तानाशाही में तब्दील हो जाए। 'वन नेशन वन इलेक्शन' पर कमेटी बनाने की यह नौटंकी भारत के संघीय ढांचे को खत्म करने का हथकंडा है। 2024 में लोगों के पास 'वन नेशन वन सॉल्यूशन' है- भाजपा के कुशासन से छुटकारा पाना।



**सरकार ने बनाई है 8 सदस्यीय कमेटी**  
'एक देश-एक चुनाव' के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में बनाई गई समिति के लिए सरकार ने शनिवार को आठ सदस्यों का नाम जारी किया। इनमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी और राज्यसभा में पूर्व नेता प्रतिपक्ष गुलाम नबी का नाम शामिल है। कांग्रेस ने इस समिति को संसदीय लोकतंत्र को खत्म करने की साजिश बताया।

**कोविंद से मिले कानून मंत्रालय के अधिकारी**  
देश में एक साथ चुनाव करने की संभावना पर बनाई गई समिति सक्रिय हो गई है। शीर्ष अधिकारियों ने समिति के अध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को प्रारंभिक जानकारी दे दी है। जानकारी के मुताबिक, केंद्रीय कानून मंत्रालय के शीर्ष अधिकारियों ने रविवार को पूर्व राष्ट्रपति से मुलाकात की। कोविंद लोकसभा, राज्य विधानसभाओं, स्थानीय निकायों के एक साथ चुनाव करने की संभावना पर और इस सिलसिले में सिफारिशों के लिए बनाई गई समिति के अध्यक्ष हैं।

**कोविंद से मिले कानून मंत्रालय के अधिकारी**  
देश में एक साथ चुनाव करने की संभावना पर बनाई गई समिति सक्रिय हो गई है। शीर्ष अधिकारियों ने समिति के अध्यक्ष और पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को प्रारंभिक जानकारी दे दी है। जानकारी के मुताबिक, केंद्रीय कानून मंत्रालय के शीर्ष अधिकारियों ने रविवार को पूर्व राष्ट्रपति से मुलाकात की। कोविंद लोकसभा, राज्य विधानसभाओं, स्थानीय निकायों के एक साथ चुनाव करने की संभावना पर और इस सिलसिले में सिफारिशों के लिए बनाई गई समिति के अध्यक्ष हैं।

## खड़गे ने बुलाई विपक्षी दलों की बैठक

**संसद के विशेष सत्र को लेकर बनेगी रणनीति**

**नई दिल्ली, एजेंसी।** संसद के विशेष सत्र से पहले कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने पांच सितंबर को अहम बैठक बुलाई है। बैठक में विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के सांसदों को बुलाया गया है। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में विपक्षी दल 18 से 22 सितंबर तक होने वाले आगामी विशेष सत्र के लिए अपनी रणनीति तय करेंगे। बैठक खड़गे ने राजाजी मार्ग स्थित अपने आवास पर बुलाई है।



## राहुल-प्रियंका का रिश्ता आम भाई-बहन जैसा नहीं : भाजपा

भाजपा ने राहुल और प्रियंका गांधी के रिश्ते पर तंज कसते हुए एक वीडियो जारी किया है। इसके कैप्शन में लिखा- राहुल गांधी और प्रियंका का रिश्ता एक आम भाई-बहन जैसा नहीं है। प्रियंका राहुल से तेज हैं, पर राहुल के इशारे पर ही पार्टी नाच रही है, सोनिया गांधी भी पूरी तरह राहुल के साथ हैं। घमंडिया गठबंधन की बैठक से प्रियंका का गायब होना सू ची नहीं है। बहन का इस्तेमाल सिर्फ चुनाव प्रचार के लिए किया जा रहा है।

## सुरजेवाला ने साधा निशाजा, कहा-

### भाजपा को क्षमा यात्रा निकालनी चाहिए

**भोपाल, देशबन्धु।** कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि भाजपा को जन आशीर्वाद नहीं, बल्कि क्षमा यात्रा निकालनी चाहिए। उन्होंने आज यहां मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि जनता उन्हें ब्या भ्रष्टाचार, 50 प्रतिशत कमीशन, महंगाई, बेरोजगारी, अनुसूचित जाति-जनजाति और महिलाओं पर अत्याचार के लिए आशीर्वाद दे।



उन्होंने कहा कि भाजपा ने अपने वरिष्ठों को अपमानित किया और जबरन घर बैठा दिया। हमारी संस्कृति में जो भी बुजुर्गों का विस्कार करता है, उसे भगवान भी माफ नहीं करते हैं। इन्होंने तो भगवान महाकाल तक को नहीं छोड़ा। श्री महाकाल महालोक मामले की जांच लोकायुक्त द्वारा कराई जा रही है। भाजपा बिखर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश को कर्ज के दलदल में उतार दिया है। 20 वर्षों में प्रदेश पर 4 लाख करोड़ रुपये से अधिक का ऋण हो गया है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान घबराहट में हैं, इसलिए आनन-फानन में घोषणाएं कर रहे हैं।

श्री सुरजेवाला ने कहा कि महंगाई ने आमजन की कमर तोड़कर रख दी है। बेरोजगारी चरम पर है, भर्ती परीक्षाओं के बाद एक के बाद एक घोटाले हो रहे हैं, महिलाओं और बच्चियों के साथ दुर्कर्म, अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के लोगों पर अत्याचार हो रहे हैं। अधोषिक्त बिजली कटौती और उपज का मूल्य न मिलने से किसान परेशान हैं, ऐसे में इन्हें जनता से आशीर्वाद नहीं क्षमा मांगने यात्रा निकालनी चाहिए।

### भाजपा का अपराधबोध जागा

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा कि प्रदेश को 20 वर्षों में पीछे धकेलने के बाद अब भाजपा का अपराध बोध जागा है, इसलिए वह जनता के बीच जा रही है। उन्होंने कहा कि इन 2 दशकों में तो मध्य प्रदेश इतना शक्तिशाली हो जाना चाहिए था कि जनता को लुभाने के लिए झूठी घोषणाएं नहीं करनी पड़ती।

### विधानसभा चुनाव की तैयारियों का जायजा लेगा आयोग का दल, आज से 3 दिन तक होंगी बैठकें

**भोपाल, देशबन्धु।** मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव की तैयारियों की समीक्षा करने भारत निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार, निर्वाचन आयुक्त अनूप चंद्र पांडेय, निर्वाचन आयुक्त अरूण गोयल के साथ आयोग के वरिष्ठ अधिकारियों का दल 4 सितंबर को भोपाल आएगा।



मुख्य निर्वाचन आयुक्त के नेतृत्व में तीन दिवसीय दौरे पर भोपाल आ रहा आयोग का दल 4 से 6 सितंबर तक निर्वाचन संबंधी विभिन्न तैयारियों की समीक्षा करेगा। कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में 4 सितंबर को मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों और एनफोर्समेंट एजेंसियों तथा मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के साथ बैठक होगी। 4 सितंबर को ही रवींद्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार एक प्रमुख सचिवों के साथ बैठक करेंगे। विशेष कवर एनवेलप, स्वीप कैलेंडर का अनावरण और मतदाता जागरूकता गीत जारी किया जाएगा। साथ ही युवा मतदाताओं को ईपिक कार्ड का वितरण भी होगा। इस मौके पर जनजाति कलाकारों द्वारा स्वीप गतिविधि के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जाएगी। समीक्षा बैठक के दूसरे दिन 5 सितंबर को आयोग द्वारा सभी 52 जिलों के कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक और सभी 10 संभागों के कमिश्नर एवं आईजी के साथ बैठक की जायेगी। तीसरे दिन 6 सितंबर को मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार, निर्वाचन आयुक्त अनूप चंद्र पांडेय और निर्वाचन आयुक्त अरूण गोयल, मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैस, पुलिस महानिदेशक सुधीर भवन तथा विभिन्न विभागों के प्रमुख सचिवों के साथ बैठक करेंगे।

## भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने चित्रकूट के मड़गांवां से किया जन आशीर्वाद यात्रा का शुभारंभ, कहा-

# भाजपा को मिलेगा भरपूर आशीर्वाद, फिर बनेगी सरकार



**सतना, देशबन्धु।** भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा ने कहा कि जब हम भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में लगे हैं, चांद और सूरज को जीतने की कोशिश में लगे हैं। जब दुनिया के सबसे ताकतवर देशों के प्रतिनिधि भारत में जी-20 के लिए एकत्र हो रहे हैं। ऐसे समय में गठबंधन हमारी संस्कृति, धर्म, संस्कारों पर और भारत की सोच पर बहुत आघात करने का प्रयास कर रहा है। यह बात उन्होंने चित्रकूट के मड़गांवां से 'जन आशीर्वाद यात्रा' के शुभारंभ अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए कहा।

उन्होंने कहा कि देश को विकास के पथ आगे बढ़ाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। बीते 9 सालों में लगभग साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं, अत्यंत गरीबी एक प्रतिशत से भी कम है। प्रधानमंत्री उज्वला योजना के तहत 9.5 करोड़ गरीब परिवारों को गैस कनेक्शन दिया गया। अब इसे विस्तार देते हुए और 75 लाख गैस कनेक्शन जारी किए जाएंगे। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश की बहनों को रक्षाबंधन का तोहफा देते हुए गैस सिलिंडर पर 2 सौ रुपए की सब्सिडी भी दी है। उज्वला योजना के लाभार्थियों को प्रति गैस सिलिंडर पर 4 सौ रुपए की बचत होगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत 9 साल में ही दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आज भारत मोबाइल उत्पादन में दूसरे स्थान पर, स्टील उत्पादन में दूसरे

## नड्डा ने उपलब्धियों के लिए आंकड़ें

### भाजपा ने बीमारू राज्य को विकसित प्रदेश बनाया

श्री नड्डा ने कहा कि कुछ दिन पहले ही केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रदेश सरकार का रिपोर्ट कार्ड जनता के समक्ष रखा था। हम जनता को बताएंगे कि हमारी सरकार आने से पहले मध्यप्रदेश की क्या स्थिति थी और आज मध्यप्रदेश विकास में कहां तक पहुंचा है। 2002 से पहले मध्यप्रदेश शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, उद्योग हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ और बीमारू राज्य था। आज यह विकसित प्रदेश के रूप में जाना जाता है। 2002 में मध्यप्रदेश में जनता पर प्रति व्यक्ति आय केवल 11,171 रुपये थी, आज यह 1.40 लाख रुपये है। 2002 में केवल 7000 किमी सड़क बनी थी, आज 5 लाख किमी से अधिक सड़क है। 2002 में एमपी में मेडिकल सीटें केवल 620 थीं, आज 4000 से अधिक हैं। हमारी सरकार आने से पहले मध्यप्रदेश में केवल 310 कॉलेज थे, आज 536 हैं। पहले केवल 23 इंस्ट्रुमेंटल एरिया थे, आज 112 इंस्ट्रुमेंटल एरिया हैं। श्री नड्डा ने कहा कि मध्यप्रदेश स्वच्छता, स्मार्ट सिटी, जल संरक्षण, पीएम स्वामित्व योजना, पीएम मातृत्व बढ़ाने योजना, पीएम स्वनिधि योजना और पीएम आवास योजना में देश में पहले स्थान पर है। कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने पीएम आवास योजना की लिस्ट दिल्ली पहुंचने ही नहीं दी थी। इसके बावजूद मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने केवल तीन वर्षों में एमपी को पीएम आवास योजना में नंबर एक पर पहुंचा दिया है।

## जनता से बोले शिवराज-

### कांग्रेस के झंझों में न आएँ, हमें जनता का भरपूर आशीर्वाद मिलेगा

इस अवसर पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आमजन से आह्वान किया कि कांग्रेस के झूठे वादों के झंझों में नहीं आना है। 2003, 2008, 2013 और 2018 में भरपूर आशीर्वाद विन्ध्य की जनता का हमें मिला था। इस बार भी हमें जनता का भरपूर आशीर्वाद मिलेगा। श्री चौहान ने कहा कि दोरी सागर बांध का अब काम शुरू होने जा रहा है। पहले यहाँ डाकुओं का आतंक था, लेकिन हमने डाकुओं का सफाया कर दिया। उन्होंने कहा कि मंदीकिनी और नर्मदा जी का संगम होगा। नर्मदा जी का पानी दोरी सागर तक लाएंगे, उसके बाद मंदीकिनी तक पहुंचाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बार बारिश कम हुई है, किसान चिंतित हैं, लेकिन चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। प्रदेश सरकार इस विपत्ति से मुक्त कराएंगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री झूठ बोलते रहे कि कर्ज माफ करेंगे, लेकिन उन्होंने किसानों को डिफॉल्टर बना दिया। कमलनाथ ने तो सारी योजनाएं बंद कर दी, कांग्रेस गंदगी और भ्रम फैला रही है। गंदे आरोप लगा रही है। पहले कांग्रेस ने 900 वादे किए पर एक भी पूरा नहीं किया।

## हर गरीब के जीवन को बदलने का काम कर रही सरकार : शर्मा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि 11 साल 11 महीने और 11 दिन इस क्षेत्र में बिजली वाले श्रीराम की धरती से जन आशीर्वाद यात्रा का आज आगाज हुआ है। भाजपा ने इस मध्यप्रदेश को विकसित राज्य बनाने का कार्य किया है। हर गरीब के जीवन को बदलने का काम भाजपा सरकार कर रही है। हमने केवल वादे-नारे नहीं दिए, जनता के काम किए हैं। उन्होंने कहा कि हमने जो किया है, उसके आधार पर जन आशीर्वाद लेने के लिए हम निकले हैं।

9 और 10 सितंबर को होगा सम्मेलन

## जी-20 सम्मेलन की सुरक्षा करेगा नेत्र एयरक्राफ्ट

**नई दिल्ली, एजेंसी।** दिल्ली में 9 और 10 सितंबर को होने वाली जी-20 सम्मेलन में अमेरिका और फ्रांस के राष्ट्रपति समेत ब्रिटेन और जापान के प्रधानमंत्री भी आएंगे। भारत विदेशी मेहमानों की सुरक्षा के लिए पुख्ता व्यवस्था कर रहा है।

भारतीय वायुसेना हवाई क्षेत्र की सुरक्षा के लिए स्वदेशी सखिलॉस और मॉनिटरिंग एयरक्राफ्ट 'नेत्र' तैनात करने की तैयारी कर रही है। वायुसेना का यह एयरक्राफ्ट फरवरी 2019 में बालाकोट स्ट्राइक के समय भी चर्चा में था। तब पाकिस्तानी एफ-16 लड़ाकू विमानों की निगरानी के लिए इसे तैनात किया गया था। दिल्ली की हवाई सुरक्षा के लिए मिसाइलें भी तैनात की जाएंगी। सेना के हेलिकॉप्टर एयर पेट्रोलिंग करेंगे। इनमें एनएसजी कमांडो रहेंगे। समारोह स्थल के आसपास बड़ी और ऊंची इमारतें पर सेना और एनएसजी तैनात होंगे। पहली बार एंटी ड्रोन सिस्टम लगाया गया है, यानी समिट के दौरान पतंग भी नहीं उड़ेगी। समिट की सुरक्षा के लिए दिल्ली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित कैमरे भी लगाए गए हैं। कोई भी सदिग्ध गतिविधि दिखने पर ये कैमरे

जी-20 बैठकों को लेकर चीन की आपत्ति खारिज

## प्रधानमंत्री बोले- देश के हर हिस्से में बैठक होना स्वभाविक

**नई दिल्ली, एजेंसी।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि यह स्वभाविक है कि जी-20 की बैठकें देश के हर हिस्से में आयोजित होंगी। प्रधानमंत्री ने चीन की उन आपत्तियों को खारिज कर दिया, जिनमें चीन ने अरुणाचल प्रदेश और कश्मीर में जी-20 बैठकों का आयोजन होने पर नाराजगी जताई थी। भारत की अध्यक्षता में जम्मू कश्मीर और अरुणाचल प्रदेश समेत कई जगहों पर जी-20 की बैठकें आयोजित की गईं।



**अलग-अलग हिस्सों में आयोजित हुई बैठकें**  
भारत की संस्कृति और विविधता को दर्शाने के लिए

पाकिस्तान की आपत्तियों को खारिज करते हुए कहा कि 'यह स्वाभाविक है कि जी-20 की बैठकें देश के हर हिस्से में आयोजित होंगी।' पर्यटन के मुद्दे पर जी-20 वरिष्ठ गुप को तीन दिवसीय बैठक 22 मई को श्रीनगर में हुई थी। इस दौरान चीन को छोड़कर अन्य जी20 देशों के प्रतिनिधियों ने इस बैठक में शिरकत की थी। वहीं मार्च में अरुणाचल प्रदेश में भी जी-20 की बैठक हुई थी।

# मंत्री भूपेंद्र सिंह ने बांदरी में फ्री वाई.फाई सेवा का शुभारंभ किया



बांदरी, देशबन्धु। मंत्री भूपेंद्र सिंह ने यहां के बस स्टैंड प्रंगण में आयोजित भव्य समारोह में बांदरी नगर परिषद के 2750 परिवारों को भूस्वामित्व अधिकार के निःशुल्क आवासीय पट्टों का वितरण करके भूखंड का मालिक बना दिया। नव गठित बांदरी तहसील का शुभारंभ करते हुए 9.16 करोड़ की लागत से तहसील भवन सह आवासीय परिसर के निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया साथ ही बांदरी नगर में फ्री वाई.फाई सेवा का शुभारंभ किया। मंत्री भूपेंद्र सिंह ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार ने आज आपको भूखंड का मालिक

## बांदरी के 2750 परिवार आवासीय भूखंडों के मालिक बने

है। आज से फ्री वाई.फाई सुविधा की शुभकामनाएं देते हुए छात्र-छात्राओं और युवाओं से कहा कि यह युग इंटरनेट और वाई फाई का है। अच्छी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, कृषि जैसे सभी क्षेत्रों में इंटरनेट के उपयोग से उपयोगी जानकारी सुलभ होती है। इसीलिए फ्री वाई.फाई सेवा उपलब्ध कराई गई है। अब आप सभी कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल चलाओ और अपने जीवन को रचनात्मक और सृजनात्मक बनाओ। खुरई विधानसभा क्षेत्र के 43 मेधावी बच्चों को मुफ्त स्कूटर दिए गए थे। शिक्षा ही समृद्ध और सुखी बनाएगी समाज को। बांदरी अस्पताल को 30 बिस्तर का बनाया जा रहा है। 5 करोड़ की लागत से बांदरी अस्पताल का नया भवन बनाएंगे। 25 लाख की लागत से निर्मित भवन में संजीवनी क्लीनिक शुरू कर रहे हैं जहां डाक्टर से उपचार के साथ मुफ्त दवाइयां से बांदरी अस्पताल का नया भवन बनाएंगे। 25 लाख की लागत से निर्मित भवन में संजीवनी क्लीनिक शुरू कर रहे हैं जहां डाक्टर से उपचार के साथ मुफ्त दवाइयां भी मिलेंगे। बांदरी में एक और गौशाला स्वीकृत करते हुए सीएमओ को निर्देश दिए कि एसडीएम से 20 एकड़ उपयुक्त भूमि चिह्नित कर आवंटित कराएँ और एक महीने में भूमि की फेंसिंग कर गौशाला तैयार करें। पूर्व से संचालित गौशाला में राजेंद्र जैन के आग्रह पर श्री सिंह ने भूसा आदि रखने के

## आज मालथौन व खुरई में पट्टा वितरण और मालथौन में फ्री वाई.फाई सेवा का होगा शुभारंभ

मंत्री भूपेंद्र सिंह आज मालथौन और खुरई में आयोजित समारोहों में भूस्वामित्व अधिकार योजना के तहत निःशुल्क पट्टा वितरित करेंगे। मालथौन में फ्री वाई.फाई सेवा का शुभारंभ और नगरपरिषद भवन निर्माण कार्य का भूमिपूजन भी किया जाएगा। दोपहर 12 बजे बस स्टैंड परिसर में आयोजित समारोह में पट्टा वितरण, संजीवनी क्लीनिक का शुभारंभ, नगरपरिषद भवन का भूमिपूजन होगा। मालथौन से श्री सिंह दोपहर 2 बजे खुरई के महाकाली टीनशेड पहुंचेंगे जहां पट्टा वितरण करेंगे।

जिए शेट और बाउंड्री वॉल का निर्माण कार्य स्वीकृत किया। श्री सिंह ने एसडीओपी को निर्देश दिए कि क्षेत्र में गोकशी की शिकायत मिली है जिसको बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। एक भी गोकशी, मवेशी कसाईयां के हाथ नहीं लगे यह सुनिश्चित करें। गोकशी की एक भी घटना होने पर अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। रानी अवंतीबाई लोधी पार्क में 50 लाख की लागत से कीर्ति स्तंभ का निर्माण कार्य स्वीकृत किया। बांदरी में सुराज कालोनी बनाने की भी घोषणा की। मंत्री श्री सिंह ने चिन्हित कर आवंटित कराएँ और एक महीने में भूमि की फेंसिंग कर गौशाला तैयार करें। पूर्व से संचालित गौशाला में राजेंद्र जैन के आग्रह पर श्री सिंह ने भूसा आदि रखने के

# पुलिस ने कट्टा सहित आरोपी को किया गिरफ्तार



सागर, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक के द्वारा अधिक से अधिक अवैध शस्त्र, अवैध शराब अवैध मादक पदार्थ पर कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया गया था निर्देश के पालन में मुखबिरान को सक्रिय किया गया, जो 3 सितम्बर 23 को मुखबिर के द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि भगतसिंह वाई में एक व्यक्ति हाथ में देशी कट्टा लेकर लहरा रहा है एवं आम लोको को भयभीत कर रहा है। मुखबिर की सूचना तत्पक्ष टीम बनाकर मौके पर जाकर की गई जो एक व्यक्ति हाथ में देशी कट्टा लिए लहराकर आम नागरिकों में दशरथ फैला रहा था जिसे घेराबंदी कर पकड़ा एवं समक्ष गवाहान तलाशी ली गई। जो आरोपी रामेश्वर जाटव पिता मुन्नालाल जाटव निवासी विवेकानंद वाई के पास एक देशी कट्टा एवं एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया। न्यायालय द्वारा आरोपी को जेल भेजा गया। आरोपी रामेश्वर जाटव आदतन अपराधी है, जिसके विरुद्ध थाना गढ़ाकोटा में पूर्व से कई मामले पंजीबद्ध हैं।

## सार-समाचार

कार से ले जा रहे 81 लीटर अवैध शराब को थाना केंद्र पुलिस ने पकड़ा



सागर, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी द्वारा जिले के समस्त थानों को अवैध जुआ, शराब, सट्टा मादक पदार्थ के संबंध में अधिकाधिक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया गया था जिसके तारतम्य में रविवार को रात्रि गश्त के दौरान रात करीब 2 बजे मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि सफेद रंग की सेंद्रो कार में भारी मात्रा में अवैध शराब लेकर सिविल लाइन की ओर जा रहे हैं, जिसमें तत्काल कार्यवाही हेतु आदेश प्राप्त कर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेश कुमार सिन्हा के मार्गदर्शन में एवं नगर पुलिस अधीक्षक यश बिजौरिया के नेतृत्व में थाना अंतर्गत टीम गठित कर त्वरित रेड कार्यवाही की गई। जिसमें पुलिस को खेल परिसर के सामने एक सफेद रंग की सेंद्रो कार आ रही थी, जो पुलिस का अपनी ओर आते देख कार का ड्राइवर कार को वहीं छोड़कर भागने लगा, जिसका पुलिस स्टॉफ द्वारा पीछा किया, जो अंधेरे का लाभ लेकर भाग गया, मौके पर कार की तलाशी ली गई, जिसमें से 9 पेट्टी देशी प्लेन शराब कुल 81 लीटर कीमती 29,250 ₹ की जात की गई। सेंद्रो कार के चालक के विरुद्ध थाना केंद्र में अपराध क्रमांक 637/23 धारा 34 (2) आवकारी एक्ट का पंजीबद्ध किया गया। उक्त कार्यवाही में उपनिरी लखन राज इंचार्ज थाना प्रभारी केन्ट, गंगाराम यादव, मणिसंकर, अनुराग, लखन, रोहित, विशाल, योगेश की भूमिका रही।

## विजय साहू जबलपुर संभाग के प्रभारी नियुक्त



सागर, देशबन्धु। अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी भाई देसाई एवं राष्ट्रीय संगठन प्रभारी सत्येंद्र यादव की सहमति एवं पूर्व विधायक सुनील जैन की अनुशंसा पर मप्र कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष योगेश यादव ने कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश महासचिव विजय साहू को जबलपुर संभाग का प्रभारी नियुक्त किया है। इस अवसर पर पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी, वरिष्ठ कांग्रेस नेता अशोक श्रीवास्तव, जिला कांग्रेस अध्यक्ष आनंद अहिरवार, जगदीश यादव, कमलेश साहू, परसोत्तम मुन्ना चौबे, सिन्दू कटारे ने बधाई देते हुए सभी वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त किया।

## ऑनलाइन आयुष चिकित्सकों से परामर्श के लिये आयुष क्वोर एप

सागर, देशबन्धु। आयुष चिकित्सा पद्धतियों को ऑनलाइन उपलब्ध कराने के लिये आयुष क्वोर एप बैंच आपके द्वार का उपयोग किया जा रहा है। इस एप से विषय विशेषज्ञों की सेवाएं रोगियों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। आजादी के अमृत महोत्सव में आयुष विभाग द्वारा औषधीय पौधों का वितरण भी किया जा रहा है। जिलों में उद्योगिक विभाग के सहयोग से औषधीय पौधे वितरित किये गए हैं। योग से निरोग कार्यक्रम आयुष, स्कूल शिक्षा विभाग और इण्डियन योग एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से संचालित किया जा रहा है। कार्यक्रम में व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये लाभार्थियों को ऑनलाइन योगाभ्यास भी कराया जा रहा है। आयुष परिसर स्थित शासकीय होम्योपैथी महाविद्यालय में सेंट्रल कॉन्सिल फॉर रिसर्च इन योग एण्ड नेचुरोपैथी वेलेनेस सेंटर संचालित किया जा रहा है। यह सेंटर केन्द्र सरकार की शत प्रतिशत वित्तीय सहायता से संचालित हो रहा है। सेंटर में जीर्ण एवं समग्र जीवन शैली से संबंधित बीमारियों के गहन उपचार की सुविधा उपलब्ध है। यहां पहुंचने वाले रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

## श्यामलम ने निर्मल अलंकरण सम्मान आयोजित

# टीकाराम त्रिपाठी रूद्र द्वितीय निर्मल साहित्य अलंकरण सम्मान से सम्मानित हुए



सागर, देशबन्धु। स्मृति शेष निर्मलचंद्र निर्मल के द्वितीय पुन्य स्मरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता लक्ष्मीनारायण चौरसिया वरिष्ठ साहित्यकार ने की। मुख्य अतिथि विधायक शैलेन्द्र जैन रहे, सारस्वत अतिथी सुप्रसिद्ध लोकगीत गायक हरगोविंद विश्व रहे। विधायक शैलेन्द्र जैन ने सागर के साहित्यकारों को साधुवाद प्रेषित कर निर्मल जी को उनकी कविताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके साथ बिताये समय को याद किया। कवि डॉ. नलिन जैन के प्रथम काव्य संग्रह नलिन गीतिका के प्रकाशन वा विमोचन पर बधाई दी, निर्मल साहित्य अलंकरण से सम्मानित टीकाराम त्रिपाठी रूद्र को बधाई दी। स्वागत भाषण संस्था अध्यक्ष उमाकांत मिश्र ने दिया। सारस्वत अतिथी हरगोविंद विश्व ने निर्मल जी से अपने संबंधों का उल्लेख किया तथा उनके स्वरमणि पुरस्कार मिलने पर निर्मल जी द्वारा उनके स्वागत का उल्लेख किया। उन्होंने अपनी चोकरडिया छंद के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में स्मृति गीत गायन शिवरतन यादव ने किया वा कवि प्रभात कटारे ने निर्मल

जी पर कविता सुनायी। कार्यक्रम अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण चौरसिया ने निर्मल जी से अपनी निकटता का उल्लेख किया वा उनके साथ कवि सम्मेलन में उपस्थित का उल्लेख किया। संस्था श्यामलम की ओर से कपिल बैसाखिया, रमाकांत मिश्रा, मुकेश कुमार तिवारी, आरके तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गजाधर सागर, शुक्रदेव प्रसाद तिवारी, अशोक सिंह मिजाज, पूरन सिंह राजपूत, वृंदावन राय सरल, डॉ. मनीष झा, संतोष श्रीवास्तव विद्यार्थी, शिवरतन यादव, प्रभात कटारे, कपिल चौबे, डॉ. ऋषभ भारद्वाज, डॉ. अनिल जैन, डॉ. शारद सिंह, सुनीला सरॉफ, ममता भूरिया, नम्रता फुसकेले, पैट्रिस फुसकेले, डॉ. विमल कुमार जैन, महेश जैन, डीके जैन, रमाकांत मिश्रा, नवनीत जैन, निर्मल जी के परिवार जन आदि उपस्थित रहे। डॉ. नलिन जैन ने अपनी प्रथम काव्य कृति पर बात रखी तथा कविता पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन हरिसिंह ठाकुर ने किया वा आभार डॉ. नलिन जैन ने व्यक्त किया।

## नाराज माझी समुदाय ने बैठक दिया धरना

सागर, देशबन्धु। मप्र माझी जनजाति संयुक्त संघर्ष समिति के निर्देशानुसार मप्र के जिला मुख्यालय पर आज माझी समुदाय ने बालाजी मंदिर में एक बैठक आयोजित की जिसमें प्रमुख मांगे पिछड़ा वर्ग से विलोपित करने आदेश जारी करो। 1 जनवरी 2018 को मप्र शासन द्वारा जारी आदेश संशोधन करो। पैसा अधिनियम में मछुआ नीति वर्ष 2008 का पालन का प्रावधान हो, मप्र सरकार का जो प्रस्ताव केन्द्र सरकार द्वारा खारिज कर के वापिस कर दिया है, उसमें कमियों को दूर कर कैबिनेट के बैठक में अनुमोदन करवा कर केन्द्र सरकार को प्रस्ताव पुनः भेजा जावे। इन मांगों को लेकर पूरे मप्र में वर्ष 2018 से लगातार प्रत्येक जिले में समिति द्वारा धरना प्रदर्शन रैलियां की जा रही है इसी का परिणाम है कि 8 अप्रैल 2023 को मुख्यमंत्री ने अपने सरकारी निवास पर प्रांतीय प्रतिनिधि मण्डल के साथ माझी समाज के समस्या के विषय में बिन्दुवार चर्चा की। इस प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व टीकाराम रायकवार ने किया। पूरी चर्चा के बाद मुख्य मंत्री ने कहा कि मैं 9 अप्रैल 2023 को ही आपकी मांग के अनुसार एक आदेश जारी करवा देता हूँ। इस वायदे के बाद भी अभी तक आदेश जारी नहीं हुआ। केवट जयंति के अवसर पर भी मुख्यमंत्री द्वारा माझी समाज की जाति प्रमाण पत्र समस्या, तालाब आवंटन की समस्याएं के विषय में घोषणा की थी। किन्तु वह आदेश आज दिनांक तक जारी नहीं हुये है इस सब कारणों से माझी समुदाय सरकार से नाराज है और धरना दिया है। इस अवसर पर यह बात कही गई है कि यदि चुनाव आचार संहिता जारी होने के पूर्व सरकार द्वारा किये गये वायदे के अनुसार आदेश जारी नहीं होते तो पूरे मप्र का माझी समुदाय जो सरकार से नाराज है माझी पंचायत बुलाकर निर्णय लेगा कि चुनाव में क्या भूमिका निभाये। भोपाल में प्रांतीय धरना दिया जावेगा। मुख्यमंत्री निवास का घेराव किया जावेगा। इसके बाद की आदेश जारी नहीं हुये तो माझी समाज आमरण अनशन का आन्दोलन भी करेगा। धरने में पवन कुमार रायकवार, धर्मेश रैकवार, दीप रैकवार, मिथिलेश रैकवार, रितेंद्र रैकवार, जगदीश रैकवार, रैंकवार, रैंकवार, टीनु रैकवार, जंगबहादुर रैकवार, गोपाल रैकवार, महेश रैकवार कंधक आदि के साथ बड़ी संख्या लोग उपस्थित थे।

## डीएसपी यातायात ने घायल दंपती को स्वयं अपने वाहन से अस्पताल में करवाया भर्ती

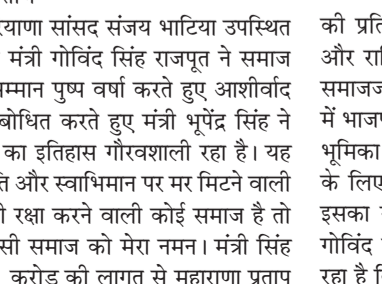
सागर, देशबन्धु। 6 सितंबर से खुरई में बागेश्वर धाम कथा के आयोजन की तैयारी की सिलसिले में उप पुलिस अधीक्षक यातायात अखिलेश तिवारी खुरई गये थे। तभी खुरई से लौटते समय खुरई से 10 किलोमीटर सागर की ओर हरिओम सेन एवं उनकी पत्नी राजकुमारी सेन निवासी ग्राम मांडल थाना कुरवाई जिला विदिशा रोड एक्सिडेंट में घायल होकर सड़क के किनारे पड़े हुए थे। उन्हें अपने वाहन में लेकर वापस खुरई हॉस्पिटल लेकर गए। एडमिट कराकर उनके इलाज की व्यवस्था कर घायल दंपती के परिजनों को सूचना दी।



# सरकार बनाने में गोविंद सिंह की अहम भूमिका रही, अब उनको 51 हजार वोटों से जिताना है: भूपेंद्र सिंह

1 करोड़ की लागत से महाराणा प्रताप की मय प्रतिमा लगाई जाएगी

सागर, देशबन्धु। सुरखी विधानसभा क्षेत्र में मंत्री गोविंद सिंह राजपूत द्वारा विभिन्न समाजों का सम्मान समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को क्षत्रिय, कायस्थ, कर्पूर, ओसवाल और जाट समाज का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसमें हजारों की संख्या में समाजजन शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर मंत्री भूपेंद्र सिंह शामिल हुए। विशिष्ट अतिथि के तौर पर करनाल हरियाणा सांसद संजय भाटिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने समाज के बुजुर्गों का स्वागत सम्मान पुष्प वर्षा करते हुए आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा कि क्षत्रिय समाज का इतिहास गौरवशाली रहा है। यह समाज देश, धर्म, संस्कृति और स्वाभिमान पर मर मिटने वाली समाज है। अगर देश की रक्षा करने वाली कोई समाज है तो वो क्षत्रिय समाज है। ऐसी समाज को मेरा नमन। मंत्री सिंह ने बताया कि सागर में 1 करोड़ की लागत से महाराणा प्रताप



की प्रतिमा स्थापित की जाएगी, जिसका टेंडर हो चुका है और राशि भी आ चुकी है। जल्द ही प्रतिमा का लोकार्पण समाजजनों की उपस्थिति में होगा। मंत्री सिंह ने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने में गोविंद सिंह राजपूत की अहम भूमिका रही है। इसलिए इस बार आप सभी को गोविंद भाई के लिए 51 हजार मतों से विजयी बनाना है। मंत्री सिंह ने इसका संकल्प भी उपस्थित समाजजनों को दिलाया। मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि क्षत्रिय समाज का इतिहास रहा है कि उन्होंने राष्ट्र सम्मान, धर्म और संस्कृति की रक्षा के

लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। यह वो समाज है, जो कभी भी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं करती। यह वही समाज है, जिसने एक बार कोई संकल्प ले लिया तो उसे पूरा करती ही है। ऐसी समाज को मेरा कोटी-कोटी नमन है। उन्होंने कहा कि सुरखी में इस बार चुनाव हार-जीत का नहीं, बल्कि आप सभी के आशीर्वाद से रिकॉर्ड मतों से जीतने का है। सांसद संजय

## शतरंज प्रशिक्षण केंद्र का हुआ शुभारंभ



सागर, देशबन्धु। रविवार को रोटी क्लब ऑफ सागर के रोटी कम्युनिटी कौंप आरसीसी के द्वारा शतरंज प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ कांची रेस्टोरेन्ट सिविल लाइन सागर में मुख्य अतिथि डॉ. आशीष त्रिपाठी वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र देवरी, विशेष अतिथि योगेश बंसल विधिक अधिकारी जिला न्यायालय सागर आरसीसी चेयरमैन अधि. वीनू शमशेर जंग बहादुर राणा, आरसीसी बहेरिया अध्यक्ष फिडे ऑर्बिटर अंकुर सिंह ठाकुर, आरसीसी पंथरिया जाट अध्यक्ष संदीप प्रजापति, आरसीसी मोतीनगर अध्यक्ष नंदकुमार मिश्रा, आयुष्मान सैनी, की उपस्थिति में किया गया। इस प्रशिक्षण केन्द्र के शुभारंभ में 22 बच्चों ने सहभागिता की। प्रशिक्षण हर रविवार को 9 बजे से 11 बजे तक कांची रेस्टोरेन्ट सिविल लाइन सागर में निःशुल्क दिया जाएगा। प्रशिक्षण केंद्र का मुख्य उद्देश्य शतरंज में बच्चों की दिलचस्पी बढ़े और प्रशिक्षण से उनके खेल में बढ़ोतरी हो एवं आगामी 5 वर्षों में सागर के छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हो सके।

## ब्रह्माकुमारी बहनों ने जेल में बांधी सदभावना राखी

सागर, देशबन्धु। केंद्रीय जेल में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विधि द्वारा रक्षाबंधन पर्व मनाया गया। जहां पर बीके नीलम दीदी ने सभी कैदी भाईयों को रक्षाबंधन का आध्यात्मिक अर्थ बताते हुए कहा कि राखी का अर्थ है पवित्रता की प्रतिज्ञा का धागा और तिलक होता है अपने सत्य स्वरूप की स्मृति की पहचान का प्रतीक सदा आत्मिक स्मृति का तिलक तोहफे का अर्थ है जो हमेशा ज्ञान और शक्ति के तोहफे देना हर एक के प्रति कल्याण की भावना और मुख मीठा का अर्थ है जो हमेशा दिल खुश मिठाई खाओ और सभी को खिलाओ। जब ये गुण हम अपनाते हैं तो स्वयं की और दूसरों की रक्षा स्वत हो जाती है। कहा जाता है कि दान पुण्य करो। दान तो हम करते हैं पर पुण्य कैसे जमा करें। तो पुण्य जमा होंगे किसी का सहयोग करके, किसी को खुशी देके, किसी का दुःख बांट के



शुभकामनाएं देते हुए कहा की जब हम अहंकार नफरत दुख अशांति डर हर एक गलत सोच बोल और कर्म से स्वयं की रक्षा करते हैं तो हमारे अंदर देवताई गुण अपने आप आ जाते हैं। परमात्मा के प्यार का बंधन ही है सच्चा रक्षाबंधन। बीके ने कहा बहन ने और प्रगति बहन ने सभी को तिलक लगाया नीलम दीदी ने खेल मांगी लाल पटेल, सहायक जेल अधीक्षक पंकज कुशवाहा, सहायक जेल अधीक्षक गीता ठाकुर, जेल टीचर गीता रैकवार और स्टाफ को राखी बांध कर सभी का मुख मीठा कराया।

## सार समाचार

## पारस रावत राष्ट्रीय परशुराम सेना के तहसील अध्यक्ष नियुक्त

नौगांव, देशबन्धु। शहर के युवा ब्राह्मण पंडित पारस रावत को राष्ट्रीय परशुराम सेना का नौगांव तहसील का अध्यक्ष नियुक्त किया है।

राष्ट्रीय परशुराम सेना जिला अध्यक्ष पंडित अभिषेक तिवारी ने नौगांव शहर के युवा पंडित पारस रावत को नौगांव तहसील अध्यक्ष बनाया गया है। तहसील अध्यक्ष पद पर नियुक्त होने पर पारस रावत ने समाज एवं सनातन धर्म के लिए कार्य करने की बात कही है। तो वहीं उनकी नियुक्ति पर समाज एवं मित्रों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

## बाजार से लौट रही महिला के लूटे गहने



बमीठा, देशबन्धु। थाना क्षेत्र में एक महिला के साथ सरेआम लूट किए जाने की घटना सामने आई है। बताया गया है कि महिला बाजार से अपने घर लौट रही थी इसी दौरान अज्ञात बदमाशों ने उसे लूट लिया। पीड़ित महिला बमीठा के बाजार से सामान खरीदने के बाद अपने घर जा रही थी। रास्ते में ग्राम घूरा के पास शाम करीब साढ़े 6 बजे बाईक से आए बदमाशों ने हीराबाई को धक्का दिया और पहले गए आभूषण छीन लिए। जब हीराबाई के भतीजे से लुटेरों पर पत्थर फेंके तो बदमाश भाग खड़े हुए। घटना के उपरांत हीराबाई ने बमीठा थाने में रिपोर्ट लिखाई है।

## 2 परिवारों के बीच चले लाठी डंडे

छतरपुर, देशबन्धु। शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र की चौबे कॉलोनी में बीती रात दो परिवारों के बीच जमकर लाठी-डंडे चले जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। बताया गया है कि बीती रात चौबे कॉलोनी निवासी सेनी परिवार और गुप्ता परिवार के बीच किसी बात को लेकर वाद-विवाद हुआ और इसके बाद बात इतनी बढ़ गई दोनों पक्षों की ओर से लाठी-डंडे चले। मारपीट में दोनों पक्षों के लोग घायल हुए हैं। घटना की जानकारी मिलने के बाद सिविल लाइन थाना पुलिस ने दोनों पक्षों पर मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है।

## माफियों ने काट डाले सागौन के हरे वृक्ष, वन विभाग को नहीं फिक्र

छतरपुर, देशबन्धु। म.प्र. के छतरपुर वनमंडल अंतर्गत वनपरिक्षेत्र बिजावर, बाजना के रामगढ़ नयाताल और बड़गांव बीट में बड़े ही सुनियोजित तरीके से बड़े पैमाने पर सागौन वृक्षों की कटाई का बेहद चौंकाने वाला मामला प्रकाश में आया है। मामले का खुलासा होने पर वन महकमे में हडकम्प मचा हुआ है। छतरपुर वन मंडल के बिजावर और बाजना क्षेत्र में जहां बेरहमी के साथ हरे-भरे सैकड़ों सागौन वृक्षों को काटा गया है, वह इलाका रामगढ़ और नयाताल तथा बड़गांव जंगल के नाम से जाना जाता है। नयाताल के इस जंगल में जिधर भी नजर दौड़ाये, हर तरफ सागौन के डूट नजर आ रहे हैं। सीसीएफ छतरपुर वन व्रत को जानकारी होने के बावजूद भी जंगल का जायजा नहीं किया है और उन्होंने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा भी लेना उचित नहीं समझा। बिजावर क्षेत्र के इस जंगल में सागौन के कितने वृक्ष कटे हैं, इसका आंकलन भी नहीं कराया गया।

उल्लेखनीय है कि छतरपुर जिले के बिजावर बाजना बड़ामलहरा वनपरिक्षेत्र अन्तर्गत रामगढ़, भर्तला, बड़गांव, सड़वा, व नयाताल वन बीटों के जंगल में सागौन वृक्षों की कटाई का सिलसिला कई वर्षों से चल रहा है, जिस पर प्रभावी अंकुश लगाने में वन अमला नाकाम साबित हो रहा है। सुनियोजित तरीके से सागौन वृक्षों की कटाई में लिस वन माफियाओं की गिद्ध दृष्टि अब सुरक्षित कहे जाने वाले समृद्ध नयाताल क्षेत्र के जंगल में गई है, वहां उन्होंने बीते कई वर्षों के दौरान बेखोफ होकर जंगल को तहस-नहस किया है और जंगल की सुरक्षा में तैनात अमले को इस विनाश लीला की भनक तक नहीं लगी। सागौन वृक्षों की व्यापक पैमाने पर हुई कटाई के इस खौफनाक नजारे को देखकर वन विभाग के आला अधिकारी भी हैरान होंगे। जिम्मेदार वन अधिकारियों व सुरक्षा में तैनात रहने वाले वन अमले



ने अपने दायित्वों का निर्वहन नहीं किया। इसी लापरवाही और अनदेखी के कारण ही इतने बड़े पैमाने पर अवैध कटाई संभव हो सकी जो निश्चित ही चिन्ताजनक है। वन पर्यवरण के जानकार अमित भटनागर ने बताया कि बड़गांव बीट के जंगल के पास ही वन सुरक्षा चौकी है, लेकिन वहां वन कर्मी रहते ही नहीं थे। सबसे ज्यादा चिन्ताजनक बात यह है कि वन परिक्षेत्र अधिकारी व अन्य वन अधिकारियों कि द्वारा भी इस इलाके का जायजा नहीं लिया जा रहा है। नतीजतन जंगल की कटाई का सिलसिला पिछले कई वर्षों से बेरोकटोक अनवरत जारी है। अमित भटनागर का कहना है कि क्षेत्र के जंगल में सागौन

वृक्षों की अवैध कटाई का मामला बेहद गंभीर अपराध है और इसके लिये जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि अवैध कटाई से जंगल को कितनी क्षति हुई है, इसका आंकलन भी कराया जाना चाहिए

## वन प्राणियों के जीवन पर मंडरा रहा संकट

बिजावर, बाजना, बड़ामलहरा क्षेत्र में वन प्राणियों की संख्या अधिक है वन्य प्राणी जंगल में विचरण करते हैं। क्षेत्र के जंगल जहां इतने व्यापक पैमाने पर अवैध कटाई हो रही है, विचरण करने

वाले वन प्राणियों पर भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। विभाग के सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार क्षेत्र के जिस इलाके में सागौन वृक्षों की कटाई हो रही है वह पूरा इलाका संरक्षित वन क्षेत्र में आता है और वहां पर वन प्राणी भारी मात्रा में विचरण करते हैं। जिनका शिकार भी वन माफियाओं के द्वारा किया जा सकता है।

## छतरपुर डीएफओ के विवादास्पद कार्यवाही को अंत में मंत्री ने दिए जांच के आदेश

छतरपुर जिले में पदस्थ प्रभारी डीएफओ पुनीत सोनकर के खिलाफ शिकायत वन मंत्री विजय शाह के पास की गई थी। शिकायत में उल्लेख किया गया था कि पुनीत सोनकर के द्वारा अपने परिवार को विभाग में अवैध तरीके से लाभ अर्जित करवाया जा रहा है डीएफओ के भाई धर्मेश सोनकर एवं बहन पूजा सोनकर के नाम का प्रमुख रूप से उल्लेख किया गया था तथा निर्माण कार्यों में लाखों रुपए की गड़बड़ी करने के आरोप लगाए गए थे। उक्त शिकायत को मंत्री ने गंभीरता पूर्वक माना और छतरपुर वन वृत्त के सीएफ को जांच के आदेश दिए थे। मंत्री के द्वारा जांच के आदेश जारी करने के बाद आन-फानन में छतरपुर वन वृत्त के सीसीएफ संजीव-झा के द्वारा वरिष्ठ अफसर की शिकायत को औपचारिकता पूर्वक जांच करवाकर उक्त पूरे गंभीर मामले में लीपापोती कर दी गई है।

## इनका कहना है

जिन वनक्षेत्रों में सागौन की कटाई हो रही है, वह आप मुझे व्हाट्सएप पर भेजिए, मैं गंभीरता पूर्वक जांच करवाता हूं।

सजीव-झा, सीएफ, वन वृत्त छतरपुर

## बिजली गुल होने की शिकायत सुनने वाला कोई नहीं, आराम फरमाते हैं कर्मचारी



छतरपुर, देशबन्धु। जिले में पड़ रही भीषण गर्मी के बीच बिजली का गुल रहना लोगों को बेहद तकलीफ दे रहा है। विभाग का शिकायत कॉल सेंटर शोपीस बना हुआ है। बीती रात जब शहरवासियों ने रात के वक्त विभागीय कार्यालय में जाकर देखा तो यहां तैनात कर्मचारी आराम फरमाते मिले। यह हालात जिला मुख्यालय के हैं और ऐसे में जिले के ग्रामीण अंचलों में क्या मंजर होगा इसका सहज अंदाजा लगाया जा सकता है। शिकायत करने पहुंचे लोगों ने बताया कि उनके मोहल्ले में बिजली नहीं थी जिस कारण से वे लगातार

विभाग के हेल्पलाइन नंबर पर कॉल कर रहे थे लेकिन जब किसी ने फोन नहीं उठाया तो वे कार्यालय पहुंचे। यहां आने पर कॉल सेंटर के कर्मचारी आराम फरमाते मिले, जिससे लोग नाराज हो गए। उल्लेखनीय है कि विद्युत विभाग के शिकायत कॉल सेंटर में रात के वक्त 1 कर्मचारी को फोन उठाने के लिए, 2 केबिल वाहन और 2 लाइन मैन को तैनात किया गया है ताकि शिकायत मिलने पर तुरंत सुधार कार्य हो सके लेकिन यह कर्मचारी अपने दायित्व को जिम्मेदारी से नहीं निभा रहे हैं जिससे हालात बिगड़ रहे हैं और लोगों में आक्रोश पनप रहा है।

## संगम सेवालय ने अटल पार्क में किया पौधारोपण

छतरपुर, देशबन्धु। संगम सेवालय की टीम टी एम्बुलेंस के द्वारा सर्किट हाउस के पास स्थित अटल पार्क में पौधारोपण किया यहाँ पर क ने र, गुड़ हल, मधुकामिनी और चंदनी के पौधे रोपे गए टीम के सदस्य दिल्लीआम अहिरवार ने बताया कि हमारी टीम ने इस पार्क को विकसित करने का संकल्प लिया है जब यहाँ पर पौधे विकसित हो जाएंगे तो यहाँ पर घास लगाई जायेगी और महिलाओं के बैठने की व्यवस्था की जायेगी साथ ही साथ महिलाओं के लिए ओपन जिम बनाई जाएगी आज पौधारोपण के समय विपिन अवस्थी, दीपु चवुटेन्द्र, प्रकाश जैन, लखनलाल अग्रवाल, हेरन्द सिंह गौसेवक रविशार सिंह, सुनील अग्रवाल, दिल्लीआम अहिरवार जीतेन्द्र शर्मा, गौतम विश्वकर्मा उपस्थित रहे।

## कांग्रेस की जन आक्रोश सभा आज

धुवारा, देशबन्धु। कांग्रेस पार्टी के द्वारा विशाल जन आमसभा का आयोजन नगर के मैन बसस्टैंड पर किया जायेगा जिसमें 6 सूत्रीय मांगों को लेकर प्रशासन के माध्यम से माहमहिम राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा जायेगा। कांग्रेस पार्टी के ब्लॉक किसान अध्यक्ष जगदीश सिंह ने जानकारी देते हुये बताया है कि कांग्रेस पार्टी द्वारा किसानों के साथ हमेशा सरकार द्वारा झूठे वादे देकर धोका दिया है क्योंकि बड़ामलहरा विधान सभा क्षेत्र में लगातार चार वर्षों से फसले खराब हो रही किसानों को कुछ नहीं मिल रहा भाजपा सरकार द्वारा आज तक किसानों को कोई मुआबजा नहीं दिया झूठे सर्वे कराकर लोगों केवल दिलासा दी गई है चारों ओर शासकीय कार्यालयों में बिना रिस्वत के काम नहीं किये जा रहे है इसलिए अब समय आ

गया है कि ऐसी भ्रष्ट सरकार को जड़ से उखाड़ फेंकने का वही कांग्रेस द्वारा आमसभा उपरांत 6 सूत्रीय मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा जायेगा जिसमें प्रमुख मांगे बिगत चार वर्षों में खराब हुई फसलों का मुआबजा दिया जाये, किसानों के बिजली बिल सहित पम्पो के बिल माफ किये जाये, वर्तमान समय में किसानों को मुफ्त एडवाइज देये जाये, सुजारा बांध से क्षेत्र के छोटे छोटे तालाबों को भरा जाये, धुवारा में एसडीएम न्यायालय न भगवा मे नायब तहसीलदार का न्यायालय पूर्व की भांति संचालित किया जाये, आवारा गावो मवेशियों के कारण किसानों की फसले चौपट हो रही है तो सरकार द्वारा ग्रामीण अंचलों में बनाई गई गौशालाओं में मवेशियों को शिफ्ट किया जाये इन सभी उक्त मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा जायेगा।

## बच्चों की पढाई में बाधक बना नाला



छतरपुर, देशबन्धु। बच्चों को बेहतर शिक्षा मिले इसके लिए सरकार स्कूल चलें हम तथा सर्व शिक्षा अभियान चला रही है लेकिन जिले में कुछ गांव ऐसे भी हैं जहां के बच्चे चाहकर भी स्कूल नहीं जा पा रहे। मामला राजनगर जनपद पंचायत क्षेत्र की ग्राम पंचायत

सांदनी की ग्राम गुडपारा का है जहां सड़क न होने के कारण बच्चे स्कूल नहीं पहुंच पा रहे। बताया जा रहा है कि गांव से स्कूल तक जाने वाले मार्ग पर एक बड़ा नाला भी है जिस पर पुल न होने के कारण बच्चे इसे पार नहीं कर पाते।

गुडपारा के ग्रामीणों ने बताया कि गांव के बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए 3 किलोमीटर दूर ग्राम पारवा के विद्यालय जाना होता है। गुडपारा से पारवा जाने वाले मार्ग पर एक बड़ा नाला है जो बारिश के दिनों में उफान पर रहता है। मार्ग पर पक्की सड़क तथा नाले पर पुल न होने के कारण बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे हैं। दूसरे मार्ग से विद्यालय जाने के लिए बच्चों को लगभग 14 किलोमीटर का सफर करना पड़ता है, जिसके चलते बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं।

ग्रामीणों की मांगें तो वे जिला प्रशासन के साथ-साथ जनप्रतिनिधियों से कई बार मांगें बनवाने की मांग कर चुके हैं लेकिन किसी ने भी उनकी समस्या को जायज नहीं माना। कुछ समय पहले ग्रामीणों ने बांस का एक पुल बनाया था लेकिन कुछ समय बाद वह टूट गया और हालात पुनः जक के तस हो गए। ग्रामीणों की शिकायत पर एसडीएम और विधायक भी आश्वासन दे चुके हैं लेकिन पुल तथा सड़क आज तक नहीं बनी।

## विद्युत कंपनी शहर में करेगी संधारण

नौगांव, देशबन्धु। नौगांव शहर में विद्युत वितरण कंपनी के द्वारा पोस्ट मानसून मेंटिनेंस के चलते आज सोमवार से कंपनी मेंटिनेंस का कार्य शुरू कर रही है, जिसके चलते शहरी क्षेत्र में सोमवार 04 अगस्त से आने वाले 9 दिनों तक मेंटिनेंस चलेगा। जिसके चलते सुबह 6 बजे से दोपहर 12 बजे तक विद्युत आपूर्ति अवरुद्ध रहेगी।

सहायक अभियंता, कनिष्ठ अभियंता ने बताया कि आज सोमवार को 132 केवी बजरिया पावर हाउस से निर्मित 33केवी एमईएस फीडर जो बापू डिग्री 33/11 केवी पावर सुबह 06:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक बंद रहेगी। जिसमें गरौली रोड, झाँसी रोड, पॉलिटेक्निक कॉलेज वाला क्षेत्र, परम कॉलोनी, वीरेंद्र कॉलोनी, पिपरी, स्टेट बैंक के पास वाला क्षेत्र, भास्कर चौराहा, कोठी, नगरपालिका के पास वाला क्षेत्र अस्पताल चौराहा, ईशा नगर चौराहा, बाजार, धौरा रोड क्षेत्र, कसाई मंडी,

कल्याण दास चौराहा के साथ नौगांव ग्रामीण से संबद्ध फीडर 11 केवी सुकवा, 11 केवी आरईएस संपूर्ण ग्राम की आपूर्ति भी प्रभावी रहेगी। मंगलवार 05 सितंबर को 33 केवी नवोदय उपकेंद्र के सभी 11 केवी फीडर बंद रहेगा। बुधवार 06 सितंबर को 11 केवी जेल फीडर बंद रहेगा जिसमें वीरेंद्र कॉलोनी, परम कॉलोनी, पॉलिटेक्निक, पिपरी, सर्किट हाउस, हरपालपुर रोड, एमडी ऑफिस रोड, अरविंद आश्रम रोड परिया प्रभावित रहेगा। इसी तरह शुक्रवार 08 सितंबर को एमईएस फीडर 33/11 केवी पावर सुबह 06:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक बंद रहेगी। जिसमें गरौली रोड, झाँसी रोड, पॉलिटेक्निक कॉलेज वाला क्षेत्र, परम कॉलोनी, वीरेंद्र कॉलोनी, पिपरी, स्टेट बैंक के पास वाला क्षेत्र, भास्कर चौराहा, कोठी, नगरपालिका के पास वाला क्षेत्र अस्पताल चौराहा, ईशा नगर चौराहा, बाजार, धौरा रोड क्षेत्र, कसाई मंडी, फीडर बंद रहेगा।

## बैठक में बनी आंदोलन की रणनीति



छतरपुर, देशबन्धु। अपनी विभिन्न समस्याओं के निराकरण की मांग को लेकर म.प्र. संयुक्त सहकारी समिति (पेक्स) कर्मचारी महासंघ के बैनर तले सहकारिता कर्मचारियों की कलमबंद हड़ताल विगत 16 अगस्त से लगातार जारी है। रविवार को शहर के बथराजन माता मंदिर में जिले के 5 सैकड़ सहकारिता कर्मचारियों ने बैठक कर आंदोलन को आगे बढ़ाने की रणनीति तैयार की है। बैठक में यह तय किया गया है कि जब तक मांगें पूरी नहीं होती तब तक यह हड़ताल जारी रहेगी। उल्लेखनीय है कि सहकारिता कर्मचारियों के हड़ताल पर जाने से त्रधा वितरण,

वसूली, खाद-बीज वितरण, फसल बीमा, उचित मूल्य की दुकानें और खाद्यान्न वितरण आदि कार्य प्रभावित हो रहे हैं। महासंघ के जिलाध्यक्ष रामकुमार अवस्थी ने बताया कि यह प्रदेश व्यापी हड़ताल सरकार की वादाखिलाफी के विरोध में की जा रही है। उन्होंने बताया कि 3 वर्ष पूर्व जब कर्मचारियों ने अपनी मांगों को लेकर आंदोलन किया तथा तब सरकार ने कर्मचारियों की मांगों का निराकरण करने का भरोसा दिया था लेकिन आज तक उनकी एक भी समस्या का निराकरण नहीं किया गया है, जो कि प्रदेश के 55 हजार कर्मचारियों के साथ धोखा

है। उन्होंने बताया कि आंदोलनकारियों ने पूर्व में प्रशासन से 29 अगस्त तक पंडाल लगाने की अनुमति ली थी लेकिन इस अवधि में जब मांगों का निराकरण नहीं हुआ तो कर्मचारियों ने जिला प्रशासन से पंडाल लगाए रखने की अनुमति मांगी जो कि प्रशासन द्वारा नहीं दी गई। इसके बाद से सहकारिता कर्मचारी अपने कार्यालयों में हड़ताल कर रहे हैं। बैठक के दौरान सहकारिता कर्मचारियों ने गीत के माध्यम से अपनी व्यथा सुनाई और यह प्रतिज्ञा ली कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होती तब तक हड़ताल जारी रखेंगे।

## भुजलिया जुलूस निकाला, डीजे में फिल्मी गीतों पर जमकर थिरके किन्नर

इटारसी, देशबन्धु। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी किन्नरों ने भुजलिया पर्व पर जुलूस निकाला। जुलूस में नर्मदापुरम से आये किन्नरों की टोली ने डीजे और डोल पर जमकर नृत्य किया। जुलूस शहर के बाजार क्षेत्र का भ्रमण करके गांधी स्टेडियम के पास संपन्न हुआ। रविवार को शहर के गांधी स्टेडियम के पास गांधी परिवार से भुजलिया का जुलूस निकाला। जुलूस में शामिल होने किन्नर नर्मदापुरम, भोपाल, इंदौर, इटारसी आदि जगहों से आये थे। जुलूस को देखने बड़ी संख्या में युवाओं की भीड़ थी। किन्नरों ने डीजे और डोल पर किन्नरों ने जमकर नृत्य किया। मनचले भी जुलूस के इर्दगिर्द थे और पुलिस को इनको दूर रखने के लिए खासा जतन करना पड़ा। किन्नरों का कजरिया जुलूस स्व. भगवान दास गांधी (गांधी परिवार) के निवास स्थान गांधी स्टेडियम इटारसी के निकट से परंपरागत पूजन के साथ शुरू हुआ और मुख्य मार्ग से भ्रमण करने के बाद वापस गांधी निवास पर समाप्त हुआ।

इटारसी, देशबन्धु। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी किन्नरों ने भुजलिया पर्व पर जुलूस निकाला। जुलूस में नर्मदापुरम से आये किन्नरों की टोली ने डीजे और डोल पर जमकर नृत्य किया। जुलूस शहर के बाजार क्षेत्र का भ्रमण करके गांधी स्टेडियम के पास संपन्न हुआ। रविवार को शहर के गांधी स्टेडियम के पास गांधी परिवार से भुजलिया का जुलूस निकाला। जुलूस में शामिल होने किन्नर नर्मदापुरम, भोपाल, इंदौर, इटारसी आदि जगहों से आये थे। जुलूस को देखने बड़ी संख्या में युवाओं की भीड़ थी। किन्नरों ने डीजे और डोल पर किन्नरों ने जमकर नृत्य किया। मनचले भी जुलूस के इर्दगिर्द थे और पुलिस को इनको दूर रखने के लिए खासा जतन करना पड़ा। किन्नरों का कजरिया जुलूस स्व. भगवान दास गांधी (गांधी परिवार) के निवास स्थान गांधी स्टेडियम इटारसी के निकट से परंपरागत पूजन के साथ शुरू हुआ और मुख्य मार्ग से भ्रमण करने के बाद वापस गांधी निवास पर समाप्त हुआ।



## गृहस्थ संत डॉ. अनिल शास्त्री ने नौगांव पहुंचकर लिया तैयारियों का जायजा

## सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग निर्माण एवं रुद्राभिषेक महायज्ञ 22 से

छतरपुर, देशबन्धु। ब्रम्हलीन गृहस्थ संत पं. देवप्रभाकर शास्त्री दहाड़ी के 88वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में नगर नौगांव में आगामी 22 सितंबर से सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग निर्माण, रुद्राभिषेक एवं 18 पुराण का धार्मिक आयोजन किया जाएगा। ददा देवप्रभाकर शास्त्री के ज्येष्ठ पुत्र गृहस्थ संत डॉ. अनिल शास्त्री के सान्निध्य में होने जा रहे इस धार्मिक आयोजन की तैयारियां आरंभ कर दी गई हैं।

नगर नौगांव के मेला ग्राउंड में 22 सितंबर से शुरू होने वाले धार्मिक विधान का श्रीगणेश 21 सितंबर को दोपहर 3 बजे



से कलश यात्रा के साथ किया जाएगा। 22 के साथ रासलीला, रामलीला भी आकर्षण से 28 सितंबर तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों

का केंद्र रहेगी। गृहस्थ संत डॉ. अनिल

शास्त्री श्रद्धालुओं को श्रीमद भागवत कथा का रसास्वादन कराएंगे। रविवार को गृहस्थ संत डॉ. अनिल शास्त्री नौगांव पहुंचे तो विधायक नीरज दीक्षित के निवास पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विनोद दीक्षित, व्हीएलई ग्रुप ऑफ कॉलेज के डायरेक्टर अशोक दीक्षित सहित ददा शिष्य मंडल, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों सहित अन्य गणमान्यजनों ने श्री शास्त्री की जोरदार अगवानी की। विधायक निवास पर चर्चा के उपरांत श्री शास्त्री मेला ग्राउंड पहुंचे जहां उन्होंने विशाल धार्मिक आयोजन की तैयारियों का जायजा लिया और आवश्यक निर्देश भी दिए।



## देश को संशय में डालती मोदी सरकार

संसदीय परम्पराओं की अवहेलना करने की आदी हो चुकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने अपनी इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए देश के इतिहास में पहली बार टिवट के जरिये संसद का विशेष सत्र बुलाकर साबित कर दिया है कि वह न केवल गैरजिम्मेदार है वरन उसका पारदर्शिता से भी कोई लेना-देना नहीं रह गया है। ऐसे वक्त में जब संयुक्त विपक्ष का गठबन्धन 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूज़िव एलाएंस) मुम्बई में 31 अगस्त व 1 सितम्बर को 2024 के लोकसभा की चुनावी रणनीति में व्यस्त था, केन्द्रीय संसदीय मंत्री प्रह्लाद जोशी ने यह जानकारी दी कि 18 से 22 सितम्बर को विशेष सत्र होगा। भले ही इस सूचना को 'इंडिया' उपेक्षित कर अपनी कार्यवाही में लगा रहा लेकिन यह एक तरह से देश को अंधेरे में रखने जैसा है क्योंकि यह कार्यप्रणाली किसी लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार की नहीं हो सकती। न ही यह 'इंडिया' की बढ़ती एकता के जवाब में होनी चाहिये।

इसे लेकर कई तरह के कयास हैं। इसमें वर्ष 2024 में होने जा रहे लोकसभा को समय से पहले करा लेने की सम्भावना से लेकर संविधान में संशोधन, चुनाव टाल देने या फिर मोदी को दमेशा के लिये पीएम बनाये जाने जैसी गुंजाइशें टटोली जा रही हैं। चीन द्वारा नया नक्शा जारी करना (जिसमें अरुणाचल प्रदेश को चीन का हिस्सा बताया गया है), मणिपुर हिंसा, गौतम अदानी को लेकर नये खुलासे, महंगाई आदि अनेक विषय हैं जिनके बारे में अनुमान व्यक्त किये जा रहे हैं कि इन मसलों पर सरकार कोई बात करना चाहती है। सही जानकारी किसी के भी पास नहीं है। फिर, हाल ही में तो संसद का सत्र हो चुका है। क्यों नहीं सरकार ने इन विषयों पर तब चर्चा कर ली? सवाल यह भी है कि क्यों लोगों या सांसदों को विषय को लेकर कयास लगाने के लिये छोड़ा जाये? क्यों नहीं सूचना के साथ ही विषय की जानकारी दे दी गई? संसद पर केवल सत्ता का हक नहीं है, जो अन्य लोगों को इसकी सूचना से वंचित रखा जाये। यह सत्र 5 दिनों का क्यों है, जबकि विशेष सत्र एकाध दिन के ही होते हैं? दुर्भाग्य से तमाशों के आयोजनों में पारंगत मोदी सरकार इसे भी इवेंट बना रही है।

आखिरकार विशेष सत्र कोई मजाक नहीं होता और न ही उसे सत्तापक्ष का कोई विशेषाधिकार समझा जाये, बावजूद इसके कि सरकार को ऐसा करने का पूरा हक है। तो भी, इस अधिकार का प्रयोग बहुत गम्भीरता से; और बेहद खास उद्देश्यों को लेकर होना चाहिये। विशेष सत्र का विषय क्या है, यह किन परिस्थितियों में आयोजित किया जा रहा है और इसे बुलाये जाने का प्रयोजन क्या है- यह सारा कुछ सरकार को बतलाना चाहिये था। यह सूचना प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से तथा बाकायदा एक अधिसूचना जारी कर नागरिकों को देनी थी। संसद पर पहला हक तो नागरिकों का होता है, चाहे वे स्वयं इसके प्रत्यक्ष सदस्य न हों। जो सदस्य दोनों सदनों में बैठते हैं वे अंततः जनसामान्य की ही नुमाइंदगी करते हैं। सरकार को पहले तो इस पर सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिये थी फिर अपना उद्देश्य बतलाना चाहिये था।

मोदी सरकार द्वारा संसदीय गरिमा व परम्पराओं को ध्वस्त करने की पूरी श्रृंखला है, जिसकी एक और कड़ी का सम्बन्ध इसी एपीसोड से है। सरकार ने एक समिति बनाई है जो 'एक देश एक चुनाव' की योजना बनाकर सरकार को सौंपेगी। देश में पहली बार ऐसा हो रहा है कि एक सेवानिवृत्त राष्ट्रपति को किसी समिति का अध्यक्ष बनाकर सरकार के किसी विभाग को रिपोर्ट सौंपने की जिम्मेदारी दी गई है जो कभी सिर्फ उस विभाग का नहीं वरन पूरी सरकार का प्रमुख हुआ करता था। वास्तविकता में चाहे न हो लेकिन संवैधानिक परिभाषा के अनुसार तो वह राष्ट्रपति ही है जिसके अधीन पूरा देश होता है। संसदीय प्रक्रिया के अंतर्गत खुद मोदी इन्हीं राष्ट्रपति के अंतर्गत काम कर चुके हैं। न यह कोई पूछने वाला है और न ही कोई बताने वाला कि आखिर एक पूर्व राष्ट्रपति कैसे किसी समिति का प्रमुख बनकर सरकार को कोई रिपोर्ट दे सकता है। कायदे से तो कोई व्यक्ति जिस दिन इस पद पर पहुंचता है, उसी दिन से वह दलगत राजनीति से ऊपर हो जाता है; पर यह सब तभी सम्भव है जब किसी व्यक्ति या किसी राजनैतिक दल की ही आंखों का नहीं, किसी सरकार की आंखों का भी नहीं, बल्कि पूरे देश की आंखों का पानी मर जाये।

आगर 'एक देश एक चुनाव' की बात करें तो यह करा पाना बहुत कठिन है- प्राशासकीय और राजनैतिक दोनों कारणों से अव्यवहारिक। आजादी के बाद हुए पहले चार आम चुनावों के साथ विधानसभाओं के निर्वाचन हुए थे परन्तु तब की परिस्थितियाँ अलग थीं। आबादी कम थी, चुनावी हिंसा न्यूनतम थी। राजनैतिक दलों के बीच आज के जैसी वैमनस्यता भी नहीं थी। सबसे बड़ी बात कि चुनावों का आकार व स्वरूप विशाल नहीं था। इसके बावजूद अगर सरकार एक साथ चुनाव कराना ही चाहती है तो पहले वह इसके फायदे बतलाये। यह भी बताये कि सामान्य नागरिकों, विशेषकर मतदाताओं को किसी भी प्रकार की परेशानी में डाले बिना ये कैसे सम्पन्न होंगे। जब मणिपुर जैसे छोटे से राज्य की हिंसा को रोकने में सरकार 5 माह में भी सफल नहीं होती और ज्यादातर राज्यों के चुनाव कई चरणों में कराने पड़ते हैं, तो इतने बड़े देश में एक दिन में कैसे चुनाव हो सकते हैं। यह जानने का हक नागरिकों का है; और बतलाना सरकार का कर्तव्य।

आ

पू बारती जानते हैं! तो यह मोडिया आज भारती प्रवृति का हो गया है। छिद्रानेधी! इंडिया की बेहद सफल मुंबई बैठक में उसने बहुत सारी कमियाँ खोज ली हैं। जैसे वह भारती सर्वश्रेष्ठ माना जाता है जो लड़की वालों के यहाँ जाकर यह कमी निकाल सके कि उसने कोकाकोला में चाय बनाकर नहीं पिलाई या पनीर चिकन नहीं बनाया! पनीर बनाया तो क्या? चिकन बनाया तो क्या? बनाना तो पनीर चिकन या चिकन पनीर चाहिए था। कहते हैं कि भारती तो राजा की लड़की की शादी में भी कमी निकाल सकता है। तो यही हाल आज हमारे मोडिया का हो गया है।

झंडा क्यों नहीं बनाया? झंडा था क्या कभी इससे पहले किसी गठबंधन का? जिस एनडीए को अब यह बीजेपी की जगह चुनाव जिता रहे हैं। क्या उसका कोई झंडा है? या केवल विपक्षी गठबंधन का ही चाहिए था! सारी शर्तें लड़की और लड़की वालों पर लागू हैं! अपने लिए तो हम हर बार नए नियम बनाते रहेंगे। पहले तो केवल आएगा तो मोदी ही का माहौल बना रहे थे। मगर जब आरएसएस ने कह दिया कि केवल मोदी के भरोसे कुछ नहीं होगा तो भाजपा की बात करने लगे। और अब जब विपक्ष एक हो गया तो भाजपा से आगे बढ़कर वे भी गठबंधन की बातें करने लगे। 2019 के बाद कहना शुरू कर दिया था कि देश से गठबंधन को राजनीति खत्म हो गई। मगर जब नीतीश कुमार के प्रयासों से इसने इनका व्यापक रूप ले लिया तो कूद कर एनडीए पर आ गए। मुंबई का संदेश क्या है? इंडिया के लिए कि छोटी-छोटी बातें छोड़े से बड़ा लक्ष्य हासिल किया जा सकता है और मोडिया के लिए कि बने रहो पछले! तुम्हारी नियति यही है!

हालाँकि इंडिया के नेताओं ने मुंबई में मोडिया को बहुत प्यार से पुचकारकर समझाया। मोटे अंदाज में नीतीश कुमार ने कहा कि हम आपको भी मुक्त करवाना चाहते हैं। राहुल ने यही कहा कि डरो नहीं। हम आपको भी भयमुक्त कर देंगे। सारे नेता उदार भाव से मोडिया को समझाते रहे। मगर इधर मीटिंग खत्म हुई उधर उनके अंदर मतभेद

रज्य में वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) सरकार ने राज्य में केन्द्र के प्री-पेटस्मार्ट बिजली मीटर के रोलआउट के लिए कुल व्यय (टोटेक्स) मॉडल को जोरदार ढंग से 'नहीं' कह दिया है। टोटेक्स मॉडल को लागू न करने और कोई अन्य लागत प्रभावी मॉडल चुनने का निर्णय मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन द्वारा बुलाई गई बैठक में लिया गया।

राज्य सरकार ने केन्द्र सरकार पर ऐसे संशोधनों के माध्यम से देश की संघीय प्रणाली को खत्म करने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया तथा हाल ही में संसद में पारित बहु-राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम में संशोधन का पुरजोर विरोध किया।

आधिकारिक तौर पर कहा गया कि केरल राज्य विद्युत बोर्ड (केएसईबी) द्वारा एक वैकल्पिक प्रस्ताव विकसित किया जायेगा।

प्रस्ताव के तहत, केएसईबी स्मार्ट मीटर परियोजना के लिए बिलिंग और सब इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करेगा। परि योजना के लिए आवश्यक संचार प्रणाली के लिए केरल फाइबरऑप्टिक नेटवर्क (के-फोन) का उपयोग किया जायेगा। केएसईबी का डेटा सेंटर डेटा का स्टॉक करेगा।

पहले चरण में 37 लाख उपभोक्ताओं को प्रीपेड स्मार्ट मीटर से लैस करने का जो फैसला किया गया था उसे राज्य सरकार ने रद्द कर दिया है। अब केएसईबी के केवल औद्योगिक और वाणिज्यिक उपभोक्ता, जिनकी संख्या तीन लाख से कम है, को ही स्मार्ट मीटर से लैस किया जायेगा। स्मार्ट मीटर रोल-आउट केन्द्र-सहायता प्राप्त पुनर्स्थापन वितरण क्षेत्र योजना का एक घटक है। जब 15 जून को परियोजना के लिए निविदा आवेदन खोला गया, तो तीन निजी फर्मों ने भाग लिया, जिनकी सबसे कम बोली 3,475.16 करोड़ रुपये थी। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को प्रति स्मार्ट मीटर 9,500 रुपये का भुगतान करना पड़ता। बोर्ड ने प्रारंभिक चरण में 37 लाख उपभोक्ताओं के लिए परियोजना को लागू करने की योजना बनाई थी।

केएसईबी में वामपंथी और कांग्रेस समर्थित ट्रेड यूनियनों के कड़े विरोध के बाद इस योजना को छोड़ दिया गया। कर्मचारी संगठनों ने इस आधार पर इस योजना का विरोध किया कि इससे निजीकरण का मार्ग प्रशस्त होगा। उनका तर्क था कि बिजली मंत्रालय ने श्रम संगठनों को चिंताओं का समाधान नहीं किया है।

सीटू के महासचिव इलामाराम करीम ने कहा कि केरल केएसईबी को कानूनी मुद्दों का हवाला देते हुए तुरंत निविदा प्रक्रिया को रद्द कर देना चाहिए था क्योंकि उसे एहसास हुआ कि स्मार्ट मीटर की कीमत 9,500 रुपये के करीब होगी, जबकि बोर्ड द्वारा निर्धारित आधार मूल्य 6,000 रुपये थी। राज्य के 1.35 करोड़ उपभोक्ताओं में से लगभग 50 लाख गरीब हैं और स्मार्ट मीटर लगाने में संक्षम नहीं हैं।

करीम ने दावा किया कि राज्य सरकार के सामने विकल्प टोटेक्स मॉडल को छोड़ना है और इसके बजाय सी-डैक द्वारा

दूढ़ने लगे। ममता बनर्जी कहाँ हैं? जबकि एक सितम्बर को मीटिंग खत्म होते ही शिवसेना के संजय राउत ने सबसे पहले यही बताया कि आपके सामने प्रेस कांफ्रेंस में खबरे नेता मौजूद हैं। मगर ममता बनर्जी को जल्दी जाना था तो वे चली गईं। लेकिन कहानियाँ कहाँ रुकने वाली थीं। ममता नाराज की खबरें शुरू कर दीं।

सीचिओ जो ममता एक सितम्बर की सुबह मीटिंग शुरू होने से पहले सोनिया गाँधी को शाल उड़ाकर उनका सम्मान कर रही थीं। बेंगलुरु की प्रेस कांफ्रेंस में माय फेवरेट राहुल कह रही थीं। वे किसी छोटी बात से नाराज होकर जा सकती थीं? लेफ्ट से उनके मतभेद को खबरें लोकसभा के मतदान



शकील अख्तर

एक देश एक चुनाव के लिए पूर्व राष्ट्रपति की अध्यक्षता में कमिटी बना रहे हैं। मगर मणिपुर के अपने केन्द्रीय मंत्री, वहाँ के दूसरे सांसद को अपने ही देश की लोकसभा में बोलने नहीं दे रहे। संसद का विशेष अधिवेशन बुलाया क्या उसमें मणिपुर की बात होगी? वह भी तो देश का हिस्सा है। क्या यह सब बातें विदेशी अतिथियों के काग़ों में नहीं जाएंगी? इन परिस्थितियों में इन्डिया आकार ले रहा है। जाहिर है एक बड़ा चैलेंज बन गया है।

होने तक चलाई जाएंगी। लेकिन यह नहीं बताया जाएगा। तीन मीटिंगें हुईं पटना, बेंगलुरु और मुंबई। लेफ्ट के एक नहीं तीन तीन नेता, सीपीआईएम के सीताराम येचुरी, सीपीआई के डी राजा और सीपीआईएमएल के दीपक भट्टाचार्य उनमें ममता बनर्जी के साथ मौजूद रहे, खूब बातें करते हुए। खींचतान कहाँ नहीं है? गोदी मोडिया में नहीं है? एक एंकर दूसरे चेनल को नीचा दिखाने के लिए तक-तक बतक करता रहा! ज्यादा से ज्यादा जहरीला बनने के लिए कुछ एंकरों में कितना भयानक काम्यदिशन है। एक-दो को तो लगता है जैसे जहर के इंजेक्शन भी लगवाने पड़ते हैं! मगर यह भक्ति तो ऐसी चीज है कि कभी रह ही जाती है। अभी एक एंकर को सुनने को मिल गया कि जब जेल गए तो कैसा लगा? ऑन एयर बात हो रही थी जहर फैलाने

में सबसे तेज निकल रहा एंकर बेचारा यह भी नहीं कह पाया कि हमारी तपस्या में कौन सी कमी रह गई! बाकी एंकर और पत्रकार अभी यह नहीं सोच पा रहे कि कभी उनसे भी उनके चैनलों के मालिक ही पुछेंगे कि यह नफरत क्यों फैलाते थे? क्या हमने कहीं लिखकर कहा था? कोई जिम्मेदारी नहीं लेगा। एंकर, पत्रकार, मोडिया मालिक सब से सवाल होगा? अभी तो कुछ राज्य सरकारों की हिम्मत को बजह से दो-चार पत्रकार एंकर ही जेल में गए लेकिन अगर विपक्ष को खासतौर से कांग्रेस की राज्य सरकारें गोदी मोडिया से डरना छोड़ दें तो बड़ी तादाद में मोडिया को कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। रिया चक्रवर्ती के मामले में क्या साबित हुआ? तो

गुलामो! चलो मान लिया। मगर हजार साल में भी भारतीय जनता ने अपनी सहज बुद्धि नहीं खोई। जितने विदेशी आए उसे बेवकूफ़ कोई नहीं कह सका। सबने उसकी बौद्धिक क्षमताओं की तारीफ़ की। मगर पिछले 9 साल में वह बौद्धिक अंधकार की तरफ बढ़ रही है। उसे रात-दिन नफरत और विभाजन सिखाया जा रहा है। पूरी दुनिया की निगाहें इस प्रयोग पर हैं कि क्या पूरे एक देश को 9-10 सालों में हजारों सालों की उदार सभ्यता को भुलाकर केवल और केवल नफरत पर जीना सिखाया जा सकता है? और अगर 140 करोड़ का पूरा एक देश नफरती बन गया तो दुनिया पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? अभी जी-20 हो रहा है। कुछ बड़े नेताओं चीन के, रूस के राष्ट्रपति, सऊदी अरब के प्रिंस ने तो आने से मना कर दिया। मगर कुछ देशों के शासनाध्यक्ष आ रहे हैं। वे अपने लिए सजाई सड़कों और गमलों को ही नहीं देखेंगे उसके पीछे भारत में क्या हो रहा है, यह भी देखेंगे।

एक देश एक चुनाव के लिए पूर्व राष्ट्रपति की अध्यक्षता में कमिटी बना रहे हैं। मगर मणिपुर के अपने केन्द्रीय मंत्री, वहाँ के दूसरे सांसद को अपने ही देश की लोकसभा में बोलने नहीं दे रहे। संसद का विशेष अधिवेशन बुलाया क्या उसमें मणिपुर की बात होगी? वह भी तो देश का हिस्सा है। क्या यह सब बातें विदेशी अतिथियों के काग़ों में नहीं जाएंगी?

इन परिस्थितियों में इन्डिया आकार ले रहा है। जाहिर है एक बड़ा चैलेंज बन गया है। कह रहा है कि हम अपने नुकसान में भी दूसरी सहयोगी विपक्षी पार्टी की मदद करेंगे। यह गिव एंड टेक नहीं होगा। सिर्फ गिव ही गिव होगा। मलबत देना ही देना। और यह जरूरी है। अगर इस बार ऐसा नहीं किया तो कपिल सिब्लव जिनकी अप्रत्याशित मुंबई मीटिंग में एंटी हुईं की यह बात सच साबित हो जाएगी कि अगर इस बार भी मोदी जी जीत गए तो फिर विपक्ष चुनाव को भूल जाए। सही बात है। अगर मोदी जी तीसरी बार आ गए तो कई विपक्षी दल खतम हो जाएंगे। कई क्षेत्रीय नेता भी। इसलिए सब 'गिव एंड टेक' की बात नहीं केवल 'गिव ही गिव' की बात कर रहे हैं। एक दूसरे को मजबूत करो। सब मजबूत हो जाओगे। (लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

## केरल ने खारिज की केंद्र की स्मार्ट मीटर योजना

विकसित तकनीक को अपनाना है, जिसे सार्वजनिक उपकरणों द्वारा लागू किया जा सकता है। इसके अलावा, सीटू जैसे ट्रेड यूनियनों के अनुरोध के बाद, सीपीआई (एम) पोलित ब्यूरो ने परियोजना के कार्यान्वयन के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया था और कहा था कि इससे गरीबों और किसानों पर असहनीय बोझ पड़ेगा।

पिनाराई विजयन के बयान में कहा गया है कि कई राज्यों को परियोजना को लागू करने और बिजली वितरण की जिम्मेदारी से हटने और अधिकतम लाभ के लिए इसे निजी कंपनियों को सौंपने के लिए मजबूर किया गया था। इससे गरीबों और किसानों पर असहनीय बोझ पड़ेगा। इसलिए इस प्रोजेक्ट को तुरंत रद्द किया जाना चाहिए। सहकारी समिति अधिनियम में संशोधन के संबंध में, केरल ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा था कि संविधान की सातवीं अनुसूची की प्रविष्टि 32 के तहत सहयोग राज्य का विषय है। केंद्र सरकार अब नवीनतम संशोधनों के जरिए कानूनी झटके से उबरने और शीर्ष अदालत के फैसले को दरकिनार करने की कोशिश कर रही है।

केरल के सहकारिता मंत्री वीएन वासवन ने केंद्र सरकार पर ऐसे प्रावधानों को शामिल करने का आरोप लगाया, जिसके तहत राज्य सहकारी रजिस्ट्रार के तहत काम करने वाली वैधानिक समितियों को भी समाप्त किया जा सकता है और बहु-राज्य समितियों में परिवर्तित किया जा सकता है। किसी भी सहकारी समिति को शासी निकाय की बैठक के निर्णय और सामान्य निकाय की बैठक में बहुमत से एक बहु-राज्य समिति में परिवर्तित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए, इस शर्त को हटा दिया गया है कि बहु-राज्य संघ बनने से पहले राज्य पंजीकरण रद्द कर दिया गया होगा और यह शर्त शामिल की गई है कि इसे स्वाभाविक रूप से रद्द कर दिया जायेगा।

केरल को यह भी आशंका है कि सोसायटी को अपनी संपत्ति और आय का उपयोग केंद्र सरकार या बड़े कॉर्पोरेट निवेशकों के निर्देश पर करने के लिए मजबूर किया जायेगा। इससे आम लोगों को मिलने वाली सहायता बहुत प्रभावित होगी और सहकारी समितियाँ उनकी पहुंच से बाहर हो जायेंगी। सबसे निर्दयी कटौती यह है कि संशोधन सहकारी समितियों के स्थानीय आर्थिक संसाधन के रूप में कार्य करने के प्राथमिक उद्देश्य को विफल कर देंगे, जिस पर कोई भी किसी भी समय भरोसा कर सकता है। ये संस्थान नई पीढ़ी के बैंकों जैसी कार्य संस्कृति अपनायेंगे जो केवल मुनाफे के लिए काम करते हैं। यही कारण है कि शीर्ष अदालत ने राज्यों के प्रति अनुकूल रुख अपनाया। जब यह स्पष्ट हो गया कि यह संघवाद के सिद्धांतों का उल्लंघन है तो उसने केंद्र सरकार के कदम को रोक दिया।

राज्य सरकार ने केंद्र सरकार पर ऐसे संशोधनों के माध्यम से देश की संघीय प्रणाली को खत्म करने की कोशिश करने का भी आरोप लगाया तथा हाल ही में संसद में पारित बहु-राज्य सहकारी सोसायटी अधिनियम में संशोधन का पुरजोर विरोध किया। आधिकारिक तौर पर कहा गया कि केरल राज्य विद्युत बोर्ड (केएसईबी) द्वारा एक वैकल्पिक प्रस्ताव विकसित किया जायेगा।

## गुरवाणी विचार

### जप मन सतनाम सदा सतनाम

थाल विच तिनि वस्तु पड़ओ-सत संतोख विचारो। अमृत नाम ठाकुर का पड़ओ-जिसका सबसे आधारो।। जे को खबे जे को भुंजे-तिस का होय उधारो।। ऐह वस्तु तजी नहीं जाई-नित नित रख उधारो।। तम संसार चरण लागि तरीअे -सब नानक ब्रह्म पसारो।। गुरवाणी को इन पंक्तियों में पंचम नानक गुरु अर्जुन देवजी मानव मन को समझाए देते हुए फरमा रहे हैं कि यह सारा संसार एक बहुत बड़ा थाल है। इस संसार रूपी थाल में तीन वस्तुएं सत्य, संतोष और बिचार सुष्टि मान हो रहे हैं। इन तीनों वस्तुओं पर विचार करने पर पूरा इंसानी आध्यात्म समझ आ सकता है। क्योंकि यह तीनों वस्तुएं प्रभु नाम के मूल पदार्थ से उपजी हैं। प्रभु परमात्मा का नाम ही हर इंसान का जीवन ढाल सकता है। यही प्रभु परमात्मा नाम ही हर इंसान का ही ओट, आसरा है। इस नाम प्राप्ति हेतु उपरोक्त तीन चीजों की आवश्यक रूप से आवश्यकता है। गुरुदेव मानक रहे हैं कि थाल में मौजूद आत्मिक भोजन का सेवन करने वाले हर प्राणी का यकीनन रूप से भला होगा ही होगा। ये तीनों वस्तुएं हमें संभाल कर रखनी होगी और अपने जीवन में इन तीनों वस्तुओं का अमल करते रहना होगा। सत्य पर चल कर ही हम इस संसार में अपना आदर्श कायम कर पाएंगे बल्कि सत्य पर चल कर ही हम प्रभु परमात्मा की प्राप्ति भी कर पाएंगे। प्रभु का नाम भी सत्य ही है इसलिए तो हमें गुरवाणी द्वारा समझाइश दी गई है कि -जप मन सतनाम सदा सतनाम। अगो संतोष के बारे में बताया गया है संतोष हमारे जीवन के लिए एक आवश्यक वस्तु है। संतोष एक ऐसा धन है जिसके आने पर हमें सारे धन धूरि के समान महसूस होने लगते हैं कहा भी गया है -

गौ धन गज धन बाज धन। और रतन धन खान धन आंवें संतोख धन सब धन धूरि समान।। फिर विचार धन का मतलब है प्रभु नाम का सिमरन बंदगी करते रहने प्रभु नाम का सिमरन (विचार)करते रहने पर हम प्रभु परमात्मा को प्राप्ति कर पाते हैं। इसीलिए तो हमें बार-बार हिदायत दी जाती है कि-सांस सांस सिमरो गोविंद। मन अंतरि की उतरे चिंद।। फिर हमें समझाया गया है सिमरो सिमर सिमर सुख पाओ।। कलि कलेश तेन माहि मिटाओ।। इस संसार में हमारा मानव जीवन पाकर आना भी तभी सार्थक समझा जाएगा। जब हम प्रभु परमात्मा द्वारा दी गई प्रत्येक श्वास रूपी पूंजी का प्रभु नाम सिमरन में खर्च करें। कुछ लोग इस बात पर किंतु परतु करते हैं कि हर वक्त प्रभु नाम सिमरन करते रहने पर हम उदर पोषण अपने और अपने परिवार का कैसे कर पाएंगे तो वे इस बात को भूल जाते हैं कि जिस प्रभु परमात्मा ने हमें इस संसार में भेजा है वह हमारे खाने-पीने की व्यवस्था पहले लिख देता है - तू जग उते पिछों आवें। उड़ पहले लिख जाता है। प्रभु परमात्मा में न्यालीस लाख जीव जल में रखे हैं उनकी भी रोजी रोटी का वह इंतजाम कर रहा है। फिर हमें हाथ पांव से तो अपने उदर पोषण हेतु का विचार करना ही है पर मन हमारा निरंकार से जुड़ना चाहिए। जिस तरह एक पतंग बाज आसमान में पतंग उड़ता है। अपने साथ खड़े संगी साथियों से बातचीत भी करता रहता है पर ध्यान उसका पतंग पर ही रहता है। कब डोर छोड़नी है, कब खींचनी है। इस बात का पूरा ध्यान रखता है। ठीक इसी प्रकार हमें मन निरंकार के साथ जोड़ना है। नाम कहे तिलोना मुख ते नाम संभाल। हाथ पांव से काम सब चित निरंजन नाल।। सत संतोख पर चलते हुए प्रभु नाम पर विचार (सिमर बंदगी) करते हुए इस संसार समुंद्र से हम अपनी जीवन नौका से खबर प्रभु परमात्मा के सान्ने दरबार में उजले मुख से जा सकते हैं। इसी प्रकार प्रभु परमात्मा की रजा पर चलते रहने पर हमें इस बात का ज्ञान हो पाएगा कि प्रभु परमात्मा का नाम ही सदा सत्य है। सच्चा आचरण रखकर सच्चा विचार रखकर ही हमें जीवन की सुझ प्राप्त हो पाती है। इन तीनों सूत्रों पर चलकर ही हम इस लोक में सुखपूर्वक जीवनयापन कर उजले मुख से परलोक गमन कर जहां पर सुख ही सुख, आनंद ही आनंद की प्राप्ति कर पाएंगे।

आपके पत्र  
इसे विकास कहते गुस्सा आता है

अधनपुर से राजिम सड़क चौड़ीकरण इस नासमझी के साथ जारी है कि इसे विकास कहते हुए गुस्सा आता है। सड़क इतनी अधिक ऊंची हो गई है कि छह सौ से अधिक आवासीय और व्यावसायिक मकान-दुकान डूब गए हैं। विकास के नाम पर यह पागलपन नहीं नहीं रहता। इस सड़क के दोनों तरफ जो नालियाँ बनाईं जा रही हैं वह सड़क से ऊंची बनाईं जा रही हैं इससे मुख्य सड़क पर आने और मुख्य सड़क छोड़कर गली में जाने के लिए यह नाली पहाड़नुमा ब्रेकर जैसा बन गया है जिस पर बुजुर्गों और बच्चों को आने-जाने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस विकास के नाम हज़ारों हरे-हरे छायादार पेड़ बलि अलग चढ़ गए हैं। इसे इस कथित विकास की पुराीन कह सकते हैं।

ताजुब तो इस बात पर भी होता है कि वैध आवासीय और व्यावसायिक मकान-दुकान के मालिक विकास के नाम पर हो रहे मनमानी पर क्यों चुपकी साधे रहे? क्या नीचे हो चुके मकान-दुकान के गंदे पानी को पंप के द्वारा ऊंचाई पर बुने नाली में पहुंचाया जाएगा? क्या इस मुर्खतापूर्ण कार्य को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती थी? खिरोधी दलों को तो इस मुद्दे पर आंदोलन कर देना था वह भी नहीं हुआ। गैर आबादी इलाके में ऊंची सड़क समझ में आने वाली बात है लेकिन आबादीयुक्त क्षेत्रों में सड़क को साल-दर-साल ऊंचा कर देने के बजाय सुविधाजनक विकल्प के बारे सोचा जाना चाहिए। -दिनेश चौहान, राजिम

## चन्द्रयान-3 और आदित्य-1 की लॉचिंग दुनिया के लिए आश्चर्य

भारत दुनिया का सरताज बन गया है। विश्वगुरु की ओर बढ़ते कदम ने दुनिया में भारत ने डंका बजा दिया है। इसरो के वैज्ञानिकों की अथक मेहनत और लोकोपयोगिता, सरकार के मेक इन इंडिया नारे की गूंज दुनिया के देशों में छाप छोड़ने लगी है। वैज्ञानिकों के इस सहसा का लोहा दुनिया ने माना है। विक्रम साराभाई जैन को दास थी कि वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए पहला कदम 1964 में रखा। 15लाख किमी की दूरी तय कर आदित्य-1 एल-1 की पाईंट पर पहुंचेगा। सूर्य की सटी स्टडी करेगा। शनिवार को श्रीहरिकोटा से सतीश धवन स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया। दुनिया की नजर भारत पर टिकी थी। दुनिया आश्चर्यजनक स्थिति में है। भारत की इस कामयाबी में कई वर्षों को मेहनत और रिसर्च का सुखद परिणाम है। भारत कामयाबी के ऊंचे शिखर पर है। सूर्य की एनर्जी और सूर्य की स्टडी से पता चलेगा। पृथ्वी पर बदलाव और धरती पर

जनजीवन को प्रभावित करने का मुख्य कारण का पता लगाना है। अमेरिका ने छह बार सोलर मिशन तो चीन में एक बार सोलर को अंधक मेहनत और लोकोपयोगिता, हुई थी। सूरज की विशालता का बड़ा पैमाना है और एक सूर्य में 13 लाख पृथ्वी समा जाए, यह वैज्ञानिकों का कहना है। भारत की इन उपबिधियों के पीछे सतारूढ़ सरकार की सफलता कारणभूत है। लेकिन यह पूरे देश और देशवासियों को उपलब्धि है जिसके कारण आज चांद और सूरज की परिक्रमा के लिए चंद्रयान 3 ने कार्य शुरू कर दिया है तो शनिवार को भारत की दूसरी कामयाबी में आदित्य-1 की लॉचिंग भारत की प्रसिद्धि की यह तस्वीर दुनिया ने नजदीक से निहारी है। भारत उलरोत्तर प्रगति का शंखजैद कर दुनिया को हर समय चौंकाने के लिए वैज्ञानिकों की मेहनत और देशवासियों की आस्था की सफलता कदम चूम रही है। कातिलाल मांडेव, सूरत

आपके पत्र

## सार-समाचार

## 12 साल पुराना कोबरा पकड़ा



**मकरोनिया, देशबन्धु।** रविवार को निर्माणधीन मकान से 6 फीट लंबा कोबरा पकड़ा, यह कोबरा करीब 12 साल पुराना है। स्नेक कैचर ने जैसे ही कोबरा को पकड़ा तो उसने गुस्से में जमकर फुफकार मारी। फुफकार सुन आसपास के लोग सहम उठे। क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल रहा। हालांकि स्नेक कैचर ने सुरक्षित कोबरा को रेस्क्यू कर पकड़ लिया है। जानकारी के अनुसार मकरोनिया इलाके में शालकरामा पटेल के मकान का निर्माण कार्य चल रहा है। जहां रविवार को विशालकाय कोबरा घुस गया। जैसे ही लोगों ने कोबरा को देखा तो हड़कप मच गया। तत्काल स्नेक कैचर अकील बाबा को सूचना दी। अकील मौके पर पहुंचे और निर्माणधीन मकान में सांप पकड़ने के लिए रेस्क्यू शुरू किया। सांप मकान में एक पत्थर के नीचे छिपा बैठा था। खुदाई कर पत्थर निकलवाया तो स्नेक कैचर सांप देख दंग रह गए। करीब पौन घंटे की मशकत के बाद सांप को रेस्क्यू कर पकड़ा जा सका। इस दौरान कोबरा ने जमकर फुफकार मारी। स्नेक कैचर अकील बाबा ने बताया कि मैं लंबे समय से सांप पकड़ रहा हूं। कई कोबरा पकड़े थे। लेकिन इतना खतरनाक और पुराना कोबरा पहली बार पकड़ा है। रेस्क्यू में पकड़या कोबरा करीब 12 साल पुराना होगा। इसका वजन साढ़े 7 किलो से भी ज्यादा था। यह सांप बेहद खतरनाक होता है। यदि किसी को उस ले तो कुछ ही सेकंडों में जान जा सकती है। सांप को पकड़कर सुरक्षित जंगल में छोड़ दिया गया है।

## समय सीमा बैठक आज

**सागर, देशबन्धु।** टीएल बैठक की समीक्षा आज प्रातः 11 बजे कलेक्टर सभाकक्ष में की जाएगी। बैठक में समस्त जिला अधिकारी सभाकक्ष में उपस्थित रहें एवं अनुविभाग स्तर के अधिकारी, समस्त अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार, समस्त जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, समस्त नगर पालिका के मुख्य कार्यपालिका अधिकारी, वीसी लिंक से जुड़ना सुनिश्चित करें।

## नरेंद्र डब्लू आठिया सुरखी विधानसभा प्रमारी बने

**सागर, देशबन्धु।** भाजपा प्रवेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा के निर्देश पर अनुसूचित जाति मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. कैलाश जाटव की सहमति से अनुसूचित जाति मोर्चा मप्र द्वारा एमपी के मन में मोदी सदस्यता अभियान 2023 की शुरुआत की गई है, इस अभियान के तहत जिला प्रभारी और विधानसभा प्रभारियों की नियुक्ति की गई है। जिसमें सुरखी विधानसभा प्रभारी नरेंद्र डब्लू आठिया को नियुक्त किया गया है उनकी इस नियुक्ति पर भाजपा के पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं ने उन्हें बधाई दी है, साथ ही नरेंद्र आठिया का कहा कि पार्टी ने उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी है उसका निर्वाहन निष्ठा पूर्वक करेंगे।

## वैभव दुबे बने सागर जिला प्रमारी

**बीना, देशबन्धु।** भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा, प्रदेश महामंत्री कविता पाटीदार, युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष वैभव पवार की अनुशांसा पर भाजयुमो के प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य टीकमगढ़ जिले के प्रभारी वैभव दुबे को मप्र विधानसभा चुनाव के अंतर्गत सागर जिला का प्रभारी सदस्य अभियान नियुक्त किया गया है। श्री दुबे ने वरिष्ठ नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया है एवं युवा मोर्चा के एवं भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने वैभव दुबे को शुभकामनाएं बधाई दी।

## कलेक्टर की मतदाता सूची में नाम

## जुड़वाने की अपील

**सागर, देशबन्धु।** यदि आपकी आयु 18 वर्ष से अधिक है और आपका नाम अभी तक मतदाता सूची में शामिल नहीं है तो परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची में नाम दर्ज करने के लिए ऑनलाइन सुविधा दी हुई है। अपना फोन उठाइए और घर बैठे मतदाता सूची में नाम शामिल कराइए। मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिए निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुसार जिले के सभी आठ विधानसभा क्षेत्रों के सभी मतदान केन्द्रों में मतदाता सूची के संक्षिप्त पुनरीक्षण का कार्य किया जा रहा है। मतदाता सूची में पात्र व्यक्तियों के नाम शामिल करने के लिए 31 अगस्त तक आवेदन पत्र दर्ज किए जा रहे हैं। बीएलओ के पास फार्म 6 में आवेदन देकर पात्र व्यक्ति अपने नाम मतदाता सूची में शामिल करा सकते हैं। मतदाता सूची में नाम शामिल कराते के लिए ऑनलाइन आवेदन की भी सुविधा दी गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक लोने ने बताया कि निर्वाचन आयोग के वोटर सर्विस पोर्टल तथा वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। अपने एन्ड्रायड मोबाइल फोन पर एप डाउनलोड कर इंस्टॉल करें। इसके बाद अपनी आईडी तथा मोबाइल नम्बर दर्ज करें। मोबाइल नम्बर पर प्राप्त ओटीपी से अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कराकर प्रपत्र 6 में नाम जोड़ने के लिए आवेदन करें। इसी तरह वोटर सर्विस पोर्टल पर भी आईडी बनाकर तथा मोबाइल नम्बर दर्ज करके उसके माध्यम से ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। आवेदन स्वीकार होने पर दर्ज किए गए मोबाइल नम्बर पर रेफरेंस नम्बर प्राप्त होगा। इसके माध्यम से अपना मतदाता परिचय पत्र इपिक कार्ड भी डाउनलोड कर सकते हैं। इसलिए जिन व्यक्तियों के नाम मतदाता सूची में शामिल नहीं हैं वे ऑनलाइन आवेदन करके घर बैठे अपना नाम मतदाता सूची में शामिल करा सकते हैं।

## टीबी क्षय रोग का उपचार आसान

**सागर, देशबन्धु।** मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ममता तिमोरे ने बताया कि टीबी संक्रमण बीमारी है। खांसी, बुखार आना, भूख न लगना आदि टीबी के लक्षण हो सकते हैं। टीबी कोई भयानक बीमारी नहीं है, टीबी का ईलाज संभव है। व्यक्ति को 6 माह डॉट पद्धति का ईलाज लेना अनिवार्य है। प्रत्येक क्षय रोगी को ईलाज लेने पर 500 रुपये पोषण के लिये प्रदान किये जाते हैं। उन्होंने बताया कि टीबी से बचने के लिये सभी स्वास्थ्य सेवार्थे जिला अस्पताल, सिविल हॉस्पिटल, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर एवं उप स्वास्थ्य केन्द्र संस्थाओं पर संपर्क कर टीबी की जांच व उपचार से बीमारी पर रोक लगाई जा सकती है।

## जिला पंचायत अध्यक्ष का जलाया पुतला

**बीना, देशबन्धु।** स्वयं को महाराणा प्रताप बनाने वाले सागर के जिला पंचायत अध्यक्ष हीरा सिंह राजपूत का बीना में विरोध हुआ। रविवार को बीना के अंबेडकर तिराहा पर अखिल भारतीय युवा क्षत्रिय महासभा के सदस्यों ने हीरा सिंह का पुतला फूँका।



राज्यपाल के नाम थाना प्रभारी बीएस ठाकुर को ज्ञापन सौंपा। अखिल भारतीय युवा क्षत्रिय महासभा के विधानसभा प्रभारी सीताराम ठाकुर ने बताया कि जिले के सिहोरा में महाराणा प्रताप की मूर्ति लगाने और भवन बनाने की मांग चल रही है। इसी उद्देश्य से क्षत्रिय समाज के लोग जिला पंचायत अध्यक्ष हीरा सिंह राजपूत से सिहोरा में महाराणा प्रताप की मूर्ति स्थापित करने की मांग को लेकर गए हुए थे। जिस पर हीरा सिंह राजपूत ने कहा कि आप महाराणा प्रताप से ही बात

कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी बात बोलकर उन्होंने महाराणा प्रताप का अपमान किया है। महाराणा प्रताप देश के गौरव है। उनके जैसा त्याग करना आसान बात नहीं है। हीरा सिंह राजपूत और उनका परिवार वोट बैंक की राजनीति करता है। वह पल-पल में पार्टी और जाति बदलते रहते हैं।

माफी नहीं मांगते हैं तो उनके खिलाफ उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा सदस्यों ने मांग की है कि उनके खिलाफ मुकदमा भी दर्ज किया जाए। पुतला दहन कार्यक्रम में विक्रम सिंह, लोकेश सिंह, दीपेंद्र सिंह, सौरभ सिंह, अंकित सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

## शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में निःशुल्क स्वास्थ्य

## शिविर एवं रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन



**बीना, देशबन्धु।** श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में मुनि श्री सुब्रत सागर के सानिध्य एवं आशीर्वाद से निशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का आयोजन प्रज्ञा सुब्रत संघ रोगी कल्याण समिति के द्वारा किया गया एवं स्वास्थ्य शिविर में विशेषज्ञ डॉ. सौरभ जैन, प्रशील गुप्ता, डॉ. प्रियंका, डॉ. सुमित अजमेरा, डॉ. पीके जैन ने मरीज का स्वास्थ्य परीक्षण किया एवं डॉ. वीरेंद्र ठाकुर सिविल हॉस्पिटल बिना ने रक्तदान शिविर में

विशेष रूप से सहयोग किया। स्वास्थ्य शिविर के दौरान लगभग 225 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और शिविर में वर्धमान पैथोलॉजी बीना द्वारा रक्त परीक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई गई। शिविर में निशुल्क दवा का वितरण भी किया गया एवं रक्तदान शिविर में रविवार को 26 लोगों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर मुनिश्री सुब्रत सागर ने शिविर उपरांत आयोजक कमिटी एवं शिविर में पधारने सभी डॉक्टरों को स्मृति चिन्ह एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

## न्यायालय द्वारा हत्या के मामले में आजीवन कारावास

**देवरीकलां, देशबन्धु।** हत्या के आरोपी को आजीवन कारावास एवं 3000 रुपए के अर्थदंड से दंडित किया गया। अपर सत्र न्यायाधीश देवरी अनुज कुमार ने अपने निर्णय में फैसला सुनाया घटना इस प्रकार है कि 24 मार्च 2019 के सुबह 10 बजे ग्राम बिजौरा मृतक शिवचरण विश्वकर्मा अपने भाई दामोदर के साथ में रिरतेदार गोकुल विश्वकर्मा के घर गुलाल लगाने गया था बाद में वही नत्थु विश्वकर्मा के किराने के टपरे पर आ गये टपरे पर नत्थु विश्वकर्मा ओर उनका लड़का अखिलेश था मृतक शिवचरण विश्वकर्मा ने अखिलेश से कहा कि मैं आपके लिए हर माह किश्त के पैसे देता था तुम मेरे 60000 रुपए लौटा दो तो आरोपी अखिलेश ने बोला कि तुम्हारे पैसे मेरे पास नहीं है कल्पनी पैसा देगी तो तेरे पैसा आ जायेंगे पैसा कंपनी में जमा है इसी बात पर से मृतक शिवचरण ओर आरोपी अखिलेश में तू-तू में ही होकर विवाद होने लगा फिर आरोपी अखिलेश मां बहिन की गंदी-गंदी गालियां देकर कहने लगा कि तू मुझे कहीं भी पैसा मांगता है मृतक ने गाली देने से मना किया तो आरोपी अखिलेश वहीं टपरा के पास से कतरना उठाकर जान से मारने की नियत से मृतक शिवचरण विश्वकर्मा को सिर में मारा जो मृतक शिवचरण विश्वकर्मा के सिर में दाहिने तरफ कनपटी के पास लगा और शिवचरण विश्वकर्मा वहीं जमीन पर गिर पड़ा बेहोश हो गया तभी आरोपी अखिलेश ने वही पड़ा पत्थर मारा जो चेहरे पर पड़ा मुंह कान सिर से खून बहने लगा जिसे देवरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अस्पताल ले जाया गया। जहां शिवचरण की इलाज के दौरान मृत्यु हो गई। थाना महाराजपुर फि पुलिस द्वारा अपराध कायम कर जांच कर अभियोग पत्र न्यायालय में पेश किया गया न्यायालय में कुल 20 साक्षियों की साक्ष्य ली गई एवं 1 बचाव साक्षी के कथन लेख किये सभी साक्षियों की साक्ष्य के बाद न्यायालय ने आरोपी अखिलेश पिता लक्ष्मी प्रसाद विश्वकर्मा निवासी ग्राम बिजौरा को हत्या का दोषी पाया जिस हेतु धारा 302 में आरोपी अखिलेश को साश्रम आजीवन सजा एवं 2000 रुपए एवं धारा 201 में 3 वर्ष का कारावास एवं 1000 रुपए के अर्थदंड से दण्डित किया गया जिसका प्रकरण क्रमांक 33/2019 है। न्यायालय में शासन की ओर से पैरवी पी एल रावत शासकीय अधिवक्ता देवरी ने की।

## व्रत के प्रति रुचि जागते ही, पाप के प्रति रुचि घट जाएगी : मुनिश्री



**मकरोनिया, देशबन्धु।** व्रत पाप से बचाते हैं और जीवन को सुखी और सानंद बनाते हैं। नियम वही है जिसके प्रति हमारी निष्ठा हो यह बात मुनिश्री सुदत्तसागर ने व्रत श्रावक संगोष्ठी, समागम कार्यक्रम में धर्म सभा को संबोधित करते हुए कही, मुनिश्री ने रती, अरति, प्रगति के सूत्र समझाए। आज की भौतिकता की दौड़ में शामिल व्यक्ति व्रत से खल रहा है। वह भूल जाता है कि किसी श्रेष्ठ का मजा तभी तक है जब तक नियमों से बंधे रहोगे इस तरह जीवन का आनंद लेना

चाहते हो तो नियम जरूर लो, व्रतो को जीवन में अंगीकर लो। क्षुल्लक श्री चंद्रदत्त सागर ने कहा व्रत छोटे ही सही, लेना शुरू करो। व्रत के प्रति रुचि जाग गई, तो पाप के प्रति रुचि घट जाएगी। मुनी संघ ने व्रतियों, प्रतिमाधारियों को आशीर्वाद देकर निरंतर प्रतिमा बढ़ाने, रत्नत्रय के मार्ग पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा देकर मुनि, आर्यिका, एलेक, क्षुल्लक दीक्षा लेकर अंतिम समय संलेखना धारण करो तभी व्रत की सार्थकता है। व्रति श्रावक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि ब्र. डी

कभी वह कहते हैं कि मैं यादव हूं। तो वह कभी कहते हैं कि मैं कुर्मी हूं। अभी वह महाराणा प्रताप बन गए ना जाने कल को और वह क्या बन जाएंगे। उन्हें इस बात के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए। वहीं ज्ञान के माध्यम से सदस्यों का कहना है कि समाज में ऐसे अभिमानी लोगों को पद पर नहीं रहना चाहिए। इस बात का क्षत्रिय समाज विरोध करता है। उनके कहे कथन पर वह समाज से माफी मांगे। यदि वह

माफी नहीं मांगते हैं तो उनके खिलाफ उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। इसके अलावा सदस्यों ने मांग की है कि उनके खिलाफ मुकदमा भी दर्ज किया जाए। पुतला दहन कार्यक्रम में विक्रम सिंह, लोकेश सिंह, दीपेंद्र सिंह, सौरभ सिंह, अंकित सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

## नेशनल लोक अदालत 9 सितंबर को विद्युत

## प्रकरणों के निराकरण में छूट

**सागर, देशबन्धु।** राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली और मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देश पर 9 सितंबर शनिवार को सागर में जिला न्यायालय व सभी तहसील सिविल न्यायालयों में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। नेशनल लोक अदालत में अपराधिक, सिविल, विद्युत अधिनियम, श्रम, मोटर दुर्घटना दवा, निर्गोशिएविल इंस्ट्रूमेंट एक्ट के तहत चेक बाउंस, कुटुंब न्यायालय, ग्राम न्यायालय, बैंक आदि विभागों के लंबित व बैंक, विद्युत, नगरपालिका आदि के प्रीलिटिगेशन प्रकरणों का आपसी समझौते से निराकरण किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव मनीष भट्ट ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में विद्युत अधिनियम के तहत न्यायालय में लंबित प्रकरणों में छूट दी जाएगी। जिसमें निम्न दावा श्रेणी के सभी घरेलू, कृषि, 5 किलो वाट भार तक के गैर घरेलू, 10 अश्वशक्ति भार तक के औद्योगिक उपभोक्ताओं को छूट दी जाएगी। प्री-लिटिगेशन स्तर पर कंपनी द्वारा आंकलित सिविल दायित्व की राशि पर 30 प्रतिशत और आंकलित राशि के भुगतान में चूक किए जाने पर निर्धारण आदेश जारी होने की तिथि से 30 दिन की अवधि समाप्त होने के बाद प्रत्येक छह माही चक्रवृद्धि दर अनुसार 16 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लगने वाले ब्याज की राशि पर 100 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। लिटिगेशन स्तर पर कंपनी द्वारा आंकलित सिविल दायित्व की राशि पर 20 प्रतिशत और आंकलित राशि के भुगतान में चूक किए जाने पर निर्धारण आदेश जारी होने की तिथि से 30 दिन की अवधि समाप्त होने के बाद प्रत्येक छह माही चक्रवृद्धि दर अनुसार 16 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लगने वाले ब्याज की राशि पर 100 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। उक्त छूट केवल नेशनल लोक अदालत 9 सितंबर में समझौता करने के लिए ही लागू रहेगी।

## एकल अभियान कार्यकर्ताओं ने रक्षाबंधन कार्यक्रम मनाया

**गौरझामर, देशबन्धु।** एकल आचार्य एव संघ समिति गौरझामर द्वारा रक्षाबंधन कार्यक्रम मनाया गया जिसमें समस्त बहनों ने थाना प्रभारी वृजमोहन कुशवाह एवं समस्त स्टाय को राखी बांधकर रक्षा का वचन लिया। थाना प्रभारी वृजमोहन कुशवाह ने कहा कि हमारे देश में रक्षाबंधन पर्व देश की संस्कृति का प्रतीक है भाई अपनी बहनों से रखी बंधवाकर रक्षा का संकल्प का वचन देता है। कहा कि लोग आज कल संस्कारों को भूलते जा रहे हैं जिससे आए दिन क्राइम बढ़ता जा रहा है मोबाइल हमारे जीवन का एक हिस्सा बन चुका है जिसे हमारे उपयोग के लिए और विश्व के बारे में हम ज्ञान प्राप्त कर सके इसके लिए बनाया गया है। लेकिन आज अधिकतर लोग मोबाइल का दुरुपयोग कर रहे हैं। अपने माता पिता के संस्कारों पर विशेष ध्यान रखे रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात थाना प्रभारी ने बच्चों से बात करते हुए कहा कि से डराने की जरूरत नहीं है जो समस्या हो खुल कर पुलिस को खुल बताए जिससे समस्या का निराकरण हो सके और थाना प्रभारी ने बहनों को उपहार दिए।

## कविता समाज में सद्प्रेरणा संचार की महत्त्वपूर्ण साहित्य विधा है : चौरसिया

**सागर, देशबन्धु।** बुंदेलखंड हिंदी साहित्य संस्कृति विकास मंच सागर की 1494 वें क्रम तथा ऑनलाईन स्वरूप की 1172 वी संगोष्ठी में मप्र के अतिरिक्त देश के विभिन्न प्रदेशों के कवि कवयित्रियों ने ऑनलाईन रूप से काव्य पाठ किया। संगोष्ठी का संचालन डॉ. नलिन जैन ने किया। सागर से वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मी नारायण चौरसिया की अध्यक्षता में संगोष्ठी संपन्न हुई। लक्ष्मी नारायण चौरसिया ने अपने उद्बोधन प्रारंभ करते हुए कहा कि साहित्य की एक लोक प्रिय विधा के रूप में कविता सबसे प्रमुख है। सैकड़ों वर्षों से संपूर्ण विश्व में कविता लेखन चल रहा है। कविता के उद्देश्य पर मत मातांतर है एक मत सौंदर्य भाव के जागरण को

उद्देश्य मानता है। अपने आसपास के जिस सौंदर्य को हम महसूस नहीं कर पाते हैं, कविता, उससे हमें साक्षात् कराती है। कविता के अन्य उद्देश्य में, स्वांतरू सुखाय, एवं पर हिताय की भावना होती है। पर हिताय कविता समाज की विभक्तियों एवं विसंगतियों पर प्रहार करती हैं। कवि शोषित वर्ग की कविता लिखकर, पाठकों में उनके प्रति दया करणा और विद्रोह की भावना पैदा करती हैं। कविता का एक अन्य उद्देश्य मनोरंजन करना है तो एक उद्देश्य समाज को सद्प्रेरणा प्रदान करना भी है। संयोजक मणीकांत चौबे बेलिहाज ने काव्यपाठ करते हुए कहा समस्याओं का पहाड़ टारिये, यूं आप हिम्मत न हारिये। कानों

कान संदेश नहीं, षडयंत्र चलते हैं। अब भी बहुत सी आस्तीं हैं, जहां विश्वासों के सांप पलते हैं। उडाने जब भी भरो, ऊंची ही भरो। सावधानियां केवल इतनी, त्रिशंकु न बनो। संगोष्ठी में आनलाईन स्वरूप से काव्यपाठ हेतु आमंत्रित देश के विभिन्न प्रांतों से कवि कवियित्रियों ने काव्य पाठ के द्वारा समाज को सकारात्मक संदेश की ऊर्जा से सराबोर किया। अनेक श्रोता आनलाईन उपस्थित रहें। मणीकांत चौबे बेलिहाज ने संगोष्ठी के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण चौरसिया तथा संचालन कर्ता डॉ. नलिन जैन सहित उपस्थित समस्त आमंत्रित कवियित्रियों कवियों तथा समस्त श्रोताओं का आभार व्यक्त किया।

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला-सागर (म.प्र.)						
क्रमांक/1043/खनिज/2023	सागर दिनांक 29.8.2023			म.प्र.		
म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18 (1-क) के अंतर्गत उत्खनियट्टा करने के लिए।						
द्वितीय सूचना						
सागर जिले में म.प्र. राजपत्र असाधारण दिनांक 22/01/2021 के पालन में गौण खनिज पत्थर (गिट्टी क्रेशर हेतु) उत्खनन पट्टो के नियम सूची अनुसार क्षेत्रों पर ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत हुए हैं। इन क्षेत्रों पर आवेदन प्रस्तुत करने हेतु प्रथम सूचना प्रकाशित की गई थी। इन पर पुनः प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस तक इन क्षेत्रों पर यथास्थित उत्खनन पट्टा आवेदन ऑनलाईन आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन ई-खनिज पोर्टल <a href="https://ekhanij.mp.gov.in">https://ekhanij.mp.gov.in</a> पर प्रस्तुत किये जायेंगे।						
आवेदन पत्रों का संक्षिप्त विवरण						
क्र.	आवेदक का नाम व पता	आवेदन दिनांक	खनिज का नाम	ग्राम एवं तहसील का नाम	खसरा नंबर व रकबा	क्षेत्र का विवरण
1	2	3	4	5	6	7
1	श्री नीरज पटेल आत्मज श्री भागीरथ पटेल निवासी ग्राम साईखेड़ा, पोस्ट पामाखेड़ी, तहसील व जिला सागर	17.07.2023	मुरम	ग्राम साईखेड़ा तहसील सागर	ख.क. 477/1 रकबा 3.00 हेक्टेयर	शासकीय भूमि
(1) उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन आवेदन पत्रों में आवेदित क्षेत्रों के संबंध में अन्य इच्छुक आवेदकों से विज्ञापित प्रकाशित होने की तारीख से आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि तक (कार्यालयीन समय सायं 5:30 बजे तक) ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।						
(2) यदि प्रकाशित विज्ञापित के उपरांत आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि तक प्रथम सूचना से प्राप्त आवेदन को शामिल करते हुए 03 अथवा उससे अधिक अन्य आवेदकों के आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं, तो प्रथम आवेदन पत्र एवं प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।						
(3) यदि प्रकाशित विज्ञापित में उल्लेखित आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि तक 03 से कम आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं तो उपरोक्त आवेधि में प्राप्त आवेदन पत्र तथा पूर्व प्रकाशित विज्ञापित की अवधि के दौरान प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।						
(4) यदि प्रथम एवं द्वितीय प्रकाशित विज्ञापित के उपरांत भी निर्धारित समयवधि में अन्य कोई आवेदन पत्र प्राप्त नहीं होता है तो प्रथम आवेदक के पक्ष में नियमानुसार खनि रियायत स्वीकृति पर विचार किया जा सकेगा।						
(5) निर्धारित समयवधि के उपरांत प्राप्त आवेदन पत्रों को विचार में नहीं लिया जाएगा।						
प्रभारी अधिकारी						खनिज शाखा जिला-सागर
जी-19151/23						

## सिंधी समाज ने सागर में झूलेलाल

## लोक बनाने की मांग रखी



**सागर, देशबन्धु।** श्री झूलेलाल चालिहा हाल में जय माता दी झूलेलाल शरण मंडली की अहम बैठक आयोजित की गयी। जिसमें जन्माष्टमी कार्यक्रम को सफल बनाने व सागर में झूलेलाल लोक बनाए जाने की मांग रखी गई। प्रेम पृथ्वानी, विनोद आहूजा ने बताया कि 7 सितंबर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया जाएगा। सुबह 5.30 बजे प्रभातफेरी निकाली जाएगी। रात 8.30 बजे झूलेलाल धर्मशाला में श्री कृष्ण वेशभूषा व पोस्टकार्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। लालाराम मेठवानी ने बताया कि प्रतियोगिता में शामिल होने वाले प्रतिभागियों के लिए पीले रंग का ड्रेस कोड निर्धारित किया गया है। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को सोने का लॉकेट पुरस्कार स्वरूप दिया जाएगा। बैठक में महिला मंडल अध्यक्ष दिव्या राजपूत, सोनू जसवानी, दयाराम बहराणी, विनोद आहूजा, दीपांशु नागदेव, सोनू जसवानी, ममता तलरजा सहित बड़ी संख्या में सिंधी समाज के लोग मौजूद थे।

## शोभा यात्रा का समाजसेवी संदीप जैन बबलू

## सिनेमा ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया



**देवरीकलां, देशबन्धु।** देवरी नगर में भगवान लवकुश जयंती के अवसर पर कुशवाहा समाज द्वारा आयोजित भव्य शोभा यात्रा का गांधी वाई पार्षद कार्यालय में समाजसेवी संदीप जैन बबलू सिनेमा ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। इस अवसर पर राकेश मिश्रा, गणेश मोनू पटेल, राजेंद्र मिश्रा, मुन्ना रावसाहब झमारा, पार्षद संजय चौरसिया, उमेश पलिया आदि उपस्थित रहे।

## विधायक ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया



**देवरीकलां, देशबन्धु।** भगवान श्री लवकुश जयंती के शुभ अवसर पर कुशवाहा समाज द्वारा आयोजित भव्य चल समारोह का देवरी विधायक कर्ष यादव ने कांसि परिवार सहित नगर के नगर पालिका चौराहे पर भव्य स्वागत किया। भगवान लवकुश जयंती के शुभ अवसर पर कुशवाहा समाज द्वारा आयोजित भव्य चल समारोह नगर के मुख्य मार्ग से निकाला गया। वहीं देवरी विधायक कर्ष यादव ने समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ देवरी नगर पालिका चौराहा पर भगवान लव कुश का पूजन कर कुशवाहा समाज सभी लोगों का भव्य पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। सभी कांग्रेस कार्यकर्ता ब्लॉक कांग्रेस कमेटी नगर कांग्रेस कमेटी उपस्थित थे।

## कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला-सागर (म.प्र.)

**क्रमांक/1043/खनिज/2023** सागर दिनांक 29.8.2023  
म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18 (1-क) के अंतर्गत उत्खनियट्टा करने के लिए।

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला-सागर (म.प्र.)						
क्रमांक/1043/खनिज/2023	सागर दिनांक 29.8.2023			म.प्र.		
म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18 (1-क) के अंतर्गत उत्खनियट्टा करने के लिए।						
द्वितीय सूचना						
सागर जिले में म.प्र. राजपत्र असाधारण दिनांक 22/01/2021 के पालन में गौण खनिज पत्थर (गिट्टी क्रेशर हेतु) उत्खनन पट्टो के नियम सूची अनुसार क्षेत्रों पर ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत हुए हैं। इन क्षेत्रों पर आवेदन प्रस्तुत करने हेतु प्रथम सूचना प्रकाशित की गई थी। इन पर पुनः प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस तक इन क्षेत्रों पर यथास्थित उत्खनन पट्टा आवेदन ऑनलाईन आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन ई-खनिज पोर्टल <a href="https://ekhanij.mp.gov.in">https://ekhanij.mp.gov.in</a> पर प्रस्तुत किये जायेंगे।						
आवेदन पत्रों का संक्षिप्त विवरण						
क्र.	आवेदक का नाम व पता	आवेदन दिनांक	खनिज का नाम	ग्राम एवं तहसील का नाम	खसरा नंबर व रकबा	क्षेत्र का विवरण
1	2	3	4	5	6	7
1	श्री नीरज पटेल आत्मज श्री भागीरथ पटेल निवासी ग्राम साईखेड़ा, पोस्ट पामाखेड़ी, तहसील व जिला सागर	17.07.2023	मुरम	ग्राम साईखेड़ा तहसील सागर	ख.क. 477/1 रकबा 3.00 हेक्टेयर	शासकीय भूमि
(1) उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन आवेदन पत्रों में आवेदित क्षेत्रों के संबंध में अन्य इच्छुक आवेदकों से विज्ञापित प्रकाशित होने की तारीख से आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि तक (कार्यालयीन समय सायं 5:30 बजे तक) ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।						
(2) यदि प्रकाशित विज्ञापित के उपरांत आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि तक प्रथम सूचना से प्राप्त आवेदन को शामिल करते हुए 03 अथवा उससे अधिक अन्य आवेदकों के आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं, तो प्रथम आवेदन पत्र एवं प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।						
(3) यदि प्रकाशित विज्ञापित में उल्लेखित आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि तक 03 से कम आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं तो उपरोक्त आवेधि में प्राप्त आवेदन पत्र तथा पूर्व प्रकाशित विज्ञापित की अवधि के दौरान प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।						
(4) यदि प्रथम एवं द्वितीय प्रकाशित विज्ञापित के उपरांत भी निर्धारित समयवधि में अन्य कोई आवेदन पत्र प्राप्त नहीं होता है तो प्रथम आवेदक के पक्ष में नियमानुसार खनि रियायत स्वीकृति पर विचार किया जा सकेगा।						
(5) निर्धारित समयवधि के उपरांत प्राप्त आवेदन पत्रों को विचार में नहीं लिया जाएगा।						
प्रभारी अधिकारी						खनिज शाखा जिला-सागर
जी-19151/23						

गांव के सरपंच और सचिव सहित अधिकारियों पर जेसीबी मशीन से काम निपटाने का आरोप

## 2 मजदूरों ने 12 दिनों में बना दिया डग प्वाइंट



मिल सके, लेकिन शासन की उसी राशि का जिम्मेदारों द्वारा जमकर फायदा उठाया गया। मजदूरों के नाम पर शासन द्वारा दी गई राशि सरपंच और सचिव द्वारा फर्जी मास्टर रोल जारी करके ठिकाने लगा दिया जाता है और निर्माण कार्य आखिरकार अनुपयोगी ही साबित होता नजर आता है। ग्राम पंचायत चंदेरी के सरपंच, सचिव सहित अधिकारियों की मिलीभगत से डग प्वाइंट के निर्माण को जेसीबी मशीन से पूर्ण कराया गया है।

### इनका कहना है

मुझे यह जानकारी नहीं है कि यह डग प्वाइंट का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। अगर मशीन से कराया गया है तो इसका मूल्यांकन नहीं किया जाएगा, सीईओ सर से शिकायत की जाएगी।

आशीष अग्रवाल सेक्टर प्रभारी उपयंत्री

यह संभव नहीं कि 3 लाख का काम केवल दो मजदूर कर दें। अगर ग्राम पंचायत चंदेरी में जेसीबी मशीन से काम हुआ है तो उसकी जांच कराया कर कार्रवाई की जाएगी।

प्रभाष राज घनघोरिया जनपद सीईओ बल्देवगढ़

**अर्खंड यादव**  
बल्देवगढ़, देशबन्धु। जनपद पंचायत की ग्राम पंचायत चंदेरी खास में सरपंच एवं सचिव द्वारा शासन के नियमों का उल्लंघन कर मनमाने ढंग से निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं। दरअसल ग्राम पंचायत चंदेरी में मनरेगा योजना से 3 लाख रुपए की लागत से डग प्वाइंट का निर्माण कार्य सुनका बाबा के पास किया गया है। इस डग प्वाइंट के निर्माण पर लगभग 2 लाख 20 हजार रुपया का भुगतान मजदूरों के नाम किया जाना है, लेकिन इस डग प्वाइंट को 2 मजदूरों ने महज 12 दिनों में पूर्ण कर दिया है। ग्रामीणों का आरोप है कि सरपंच और

सचिव द्वारा मनरेगा योजना होने वाले निर्माण कार्य जेसीबी मशीन की मदद से कराए जाते हैं। इस निर्माण कार्य को जेसीबी मशीन से पूर्ण किया गया है। इस निर्माण कार्य में मनमाना किए जाने शिकायत ग्रामीणों ने जनपद सीईओ से की गई है।

शासन द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर ग्रामों में पानी के उद्धार एवं मजदूरों को ग्राम में ही मजदूरी देने के लिए अपनी योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए लाखों रुपए की राशि मनरेगा योजना से स्वीकृत करती है। जिससे ग्रामीणों को पानी के संकट में कुछ हद तक राहत मिल सके। मजदूरों को गांव में मजदूरी

मनमानी पर उतारु शराब ठेकेदार, शिकायत के बावजूद आबकारी अधिकारियों ने साधा मौन

## निर्धारित दामों से अधिक दाम चुकाने को मजबूर शराब के शौकीन

बल्देवगढ़, देशबन्धु। नगर में एवं ग्राम पंचायत कैलपुरा में स्थित देशी एवं अंग्रेजी कम्पोजिट शराब दुकान पर ठेकेदार द्वारा आबकारी विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों से मिलीभगत कर मनमानी कीमत पर शराब बेची जा रही है। इस कम्पोजिट शराब दुकान से लोगों के साथ खुली लूट की जा रही है।

शासन से निर्धारित कीमत से अधिक कीमत पर शराब बेचने की शिकायत कई बार ग्राहक आबकारी विभाग के अधिकारियों से कर चुके हैं। आबकारी विभाग कोई कार्रवाई करने को तैयार नहीं है। ठेकेदार अपनी मनमानी पर उतारू है। कम्पोजिट शराब दुकान बल्देवगढ़ में शराब ठेकेदार द्वारा लोगों से मनमानी वसूली हो रही है और इसी दुकान से क्षेत्र में धड़ले से अवैध शराब का कारोबार पनप रहा है।

गौरतलब है कि कम्पोजिट शराब दुकान बल्देवगढ़ और कैलपुरा से अंग्रेजी हो या फिर देशी शराब प्रिंट रेट से 30 से 50 रुपए से अधिक दाम पर बेची जा रही है। कम्पोजिट शराब दुकान पर रेट सूची चप्पा होने के बाद भी रेट सूची मानने को ठेकेदार तैयार नहीं है। आबकारी विभाग के अधिकारियों को गड़बड़ी होने की



जानकारी होने के बावजूद भी ठेकेदार और उसके कर्मचारियों द्वारा आबकारी आयुक्त के आदेश की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। टीकमगढ़ जिला आबकारी अधिकारी को भी शायद आबकारी आयुक्त के आदेश की परवाह ही नहीं, क्योंकि इन ठेकेदारों पर कार्यवाही तो दूर अधिकारियों द्वारा इन शराब दुकान बल्देवगढ़ और कैलपुरा का निरीक्षण तक नहीं किया जाता है। इसी से शराब दुकान के ठेकेदार के हौसले बुलंद हैं और इसका खामियाजा शराब लेने वाले लोगों को उठाना पड़ता है। देशी एवं अंग्रेजी शराब ठेकेदार द्वारा अधिक कीमत में शराब बेची जाती है। प्रिंट रेट से उन्हें कोई मतलब नहीं

होता जो कि उपभोक्ताओं के साथ ठगी है। अब देखा यह है कि आबकारी अधिकारी द्वारा इस संबंध में क्या टोस प्रयास किए जाते हैं। ग्राहक स्वामी लोधी ने बताया कि बल्देवगढ़ और कैलपुरा शराब दुकानों से एमआरपी से अधिक कीमत पर शराब बेची जाती है। कई बार हम लोग इस बात को लेकर बहस भी कर चुके हैं लेकिन दुकानदारों द्वारा हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है।

इसकी शिकायतों भी कई बार अधिकारियों एवं पुलिस से कर चुके हैं लेकिन कोई सुनने वाला ही नहीं है। जब हमारी टीम बल्देवगढ़ देशी एवं अंग्रेजी कम्पोजिट शराब दुकान में कर्मचारी से रेट पूछे तब यह हकीकत सामने आई। उन्होंने बताया कि देशी शराब सादा क्राटर 80 रुपए में और देशी मसाला क्राटर 90 रुपए, वियर 230 रुपए, अंग्रेजी शराब का क्राटर 250 रुपए और आरएस की बोतल 700 रुपए में दी जाएगी। जब कर्मचारी से कहा कि आप लोग एमआरपी से ज्यादा रेट में शराब बेच रहे हैं तो उन्होंने चुप्पी साध ली। अधिकतर ग्राहकों को शराब के रेट पता होते हैं और जिन्हें नहीं पता होते हैं उन्हें हम बता देते हैं।

## गौशाला में श्रीराम हर्षण स्व सहायता समूह की महिलाएं कर रही सेवा



टीकमगढ़, देशबन्धु। जनपद पंचायत बल्देवगढ़ क्षेत्र की ग्राम पंचायत चंदपुरा में श्रीराम हर्षण महिला स्व सहायता समूह गौशाला का संचालन किया जा रहा है। यहां करीब 120 गौवंश की देखभाल की जा रही है। यहां देखरेख की कमान स्व सहायता समूह की महिलाओं को दी गई है। समूह की महिलाएं यहां पर गायों की देखरेख कर रही हैं। समूह की महिलाओं का कहना है कि अब जो भी होगा वह हम करने के लिए

तैयार हैं। श्रीराम हर्षण स्व सहायता समूह की महिलाएं और दो चौकीदार हैं जो की व्यवस्था देख रहे हैं। समूह की महिला श्रीमति सुखबती लोधी ने बताया कि उन्हें गौशाला की व्यवस्था की कमान दी गई है। समूह की महिलाओं ने बताया कि पशुओं के लिए गोदाम में भूसे का स्टॉक, पशु आहार (सब्जियां) गायों को शाम सुबह दिया जा रहा है, वही गायों को पानी पीने के लिए व्यवस्था की गई है।

## जुआ खेलते पाए जाने पर 6 व्यक्तियों के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम सासत्या एवं एसडीओपी जतारा अभिषेक गौतम के द्वारा जुआ, सट्टा पर कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में थाना प्रभारी बम्हरी कला उप निरीक्षक रामसिया चौधरी के नेतृत्व में शनिवार 2 सितम्बर को मुखबिर की सूचना पर चौकी कनेरा थाना बम्हरी कला पुलिस द्वारा ग्राम सिमरा खुर्द से करन सिंह पिता ठाकुरदास लोधी उम्र 42 साल, लक्ष्मी पिता काशीराम लोधी उम्र 35 साल, चंद्रभान पिता बरेलाल कुशवाहा उम्र 30 साल, कनई पिता सुकली कुशवाहा उम्र 27 साल, देशराज पिता मल कुशवाहा उम्र 41 साल, लखन पिता मलखान कुशवाहा उम्र 30 साल सभी निवासी ग्राम सिमराखुर्द को जुआ खेलते हुए पकड़ा गया है। इन जुआरियों के पास से जुआ खेलने में प्रयुक्त कुल 4100 रूपये तथा 52 तास पत्ते जप्त किये गये। सभी आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्रमांक 245/23 ब अपराध क्रमांक 246/23 धारा 13 जुआ एक्ट का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उक्त कार्यवाही में उप निरीक्षक आकाश रूसिया चौकी प्रभारी कनेरा, प्रधान आरक्षक 161 मुकेश, 117 रंजित, 433 अब्दुल मुईन, आरक्षक 543 सतीश व आरक्षक 402 अविनेष की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

## अर्चित ने स्कूली बच्चों के बीच मनाया जन्मदिन



टीकमगढ़, देशबन्धु। जनशिक्षक सुनील त्रिपाठी के पुत्र अर्चित त्रिपाठी ने अपना जन्मदिन स्कूली बच्चों के बीच मनाया। अर्चित त्रिपाठी जन्म दिन मनाने के लिए सबसे पहले पुष्पा हाई स्कूल पहुंचे और समस्त शिक्षकों का मुंह मीठा कराके आशीर्वाद लिया। इसके पश्चात शासकीय माध्यमिक बालक शाला अस्तौन, माध्यमिक शाला आजादपुरा जाकर स्कूली बच्चों को बीच जन्मदिन मनाकर भोजन कराया गया।

इस अवसर पर जिला सांख्यिकी अधिकारी आर एल पाराशर, एपीसी शैलेष श्रीवास्तव, संयुक्त मोर्चा के जिला अध्यक्ष मधुकर उपाध्याय, जन शिक्षक अतुल भट्ट, खेमराज मांझी, संतोष पट्टेरिया, राजेश रजक, मनोज यादव, मनीराम अहिरवार, अमित साहू, नंदकिशोर राय सहित सुनील त्रिपाठी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। स्कूलों के बच्चों को रसगुल्ला, मीठी बूंदी, नमकीन का वितरण कर आनंद भोज के साथ जन्मदिन मनाया गया।

## 336 क्वार्टर शराब सहित आरोपी गिरफ्तार



लिथौरा पुलिस को मिली सफलता, खेत पर बनी टपरिया में बना रखा था स्टॉक

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी द्वारा अवैध शराब विक्रय एवं परिवहन करने वालों पर कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम एवं एसडीओपी जतारा अभिषेक गौतम

के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी लिथौरा उप निरीक्षक रघुराज सिंह को शनिवार 2 सितम्बर को जरिये मुखबिर की सूचना प्राप्त हुई कि सतगुवा की नदी के किनारे जुंदन प्रजापति अपने खेत में बनी हुई टपरिया में भारी मात्रा में अवैध शराब रखे हुये हैं। सूचना की तस्दीक हेतु हमराह स्टाफ के मुखबिर के बताये हुये खेत के पास टपरिया के अंदर एक व्यक्ति बैठा हुआ दिखा, जिसे हमराह स्टाफकी मदद से घेराबंदी कर पकड़ा एवं

नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम जुंदन पिता किशोरा प्रजापति उम्र 55 साल निवासी ग्राम सतगुवा खास का होना बताया। उक्त आरोपी टपरिया में बेचने के लिए अवैध शराब रखे हुए था, उसमें कुल 7 पेट्री देशी प्लेन मदिरा डीसीआर कंपनी की रखी मिली जो कुल 336 क्वार्टर कुल 60.480 लीटर व कुल कीमती 21840 रुपए की थी। जुंदन प्रजापति से उक्त अवैध शराब को जप्त कर आरोपी के विरुद्ध थाना लिथौरा पर अपराध क्रमांक 197/23 धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही की गई। उपरोक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी लिथौरा उप निरीक्षक रघुराज सिंह, प्रधान आरक्षक 280 राघवेंद्र, आरक्षक 622 अंकुल, 676 विनोद, 511 बृजेन्द्र, 495 केके, 389 बृजप्रताप, एनआरएस धर्मेन्द्र राजपूत, बलवान यादव का सराहनीय योगदान रहा।

## अवैध रेत परिवहन करते हुए टेक्टर-ट्राली जप्त

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी द्वारा अवैध रेत परिवहन करने वालों पर कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम सासत्या एवं एसडीओपी जतारा अभिषेक गौतम के मार्गदर्शन में कार्यवाही करते हुये थाना चंदेरा पुलिस द्वारा 2 सितम्बर को ग्राम हरकनपुरा से चालक खेमचन्द्र पिता हरनारायण कुशवाहा उम्र 23 साल निवासी हरकनपुरा को लाल रंग का महिन्द्रा कम्पनी का टेक्टर-ट्राली सहित अवैध रेत का परिवहन करते हुए पकड़ा गया, जिस पर रजिस्ट्रेशन नम्बर भी अंकित नहीं पाया गया। टेक्टर-ट्राली को जप्त कर चालक के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध किया गया। उक्त कार्यवाही में उप निरीक्षक अंकित दुबे थाना प्रभारी चंदेरा, उप निरीक्षक डीपी गौतम, आरक्षक 729 वीरन यादव, आरक्षक 455 वेदप्रकाश शर्मा, आरक्षक 519 लाखन, आरक्षक 24 राजकुमार, आरक्षक चालक 84 राजवीर सिंह भदौरिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही।



## विधानसभा क्षेत्र में पहुंचे राज्यमंत्री राहुल सिंह का जनता ने किया स्वागत

विंध्यवासिनी माता के दर्शन करके लिया आशीर्वाद



बल्देवगढ़, देशबन्धु। खरगापुर विधायक राहुल सिंह लोधी को मध्य प्रदेश शासन में राज्यमंत्री बनाए जाने के बाद रविवार को बल्देवगढ़ एवं खरगापुर में प्रथम आगमन हुआ। इस दौरान भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और नगर के हजारों लोगों ने जगह-जगह फूल माला पहना कर एवं पुष्प वर्षा कर बंड बाजा के साथ जोरदार भव्य स्वागत किया गया। बल्देवगढ़ आने से पहले राज्य मंत्री राहुल सिंह लोधी ने विंध्यवासिनी माता मंदिर पहुंचकर दर्शन किए और माता रानी का आशीर्वाद लिया। इसके बाद वह खरगापुर के लिए बल्देवगढ़ से रवाना हुए। अस्पताल के पास लोगों ने स्वागत कर तुलादान किया। वही बस स्टैंड पर वन विभाग के अधिकारियों द्वारा तुलादान किया गया। इसके बाद भाजपा कार्यकर्ता नंदू चौरसिया के

घर सहित नगर में लगभग पांच जगह मंत्री का तुलादान किया गया। मंत्री जी नगर में पैदल चलते हुए नगर परिषद कार्यालय पहुंचे जहां पर नगर परिषद अध्यक्ष शालिनी विश्व दीपक मिश्रा, सीएमओ अरविंद तिवारी सहित नगर परिषद के सभी लोगों ने पुष्प वर्षा कर एवं फूलमाला पहना कर स्वागत किया। इसके बाद मंत्री जी का काफिला जनपद कार्यालय पहुंचा जहां पर एसडीएम विजय सेन, जनपद सीईओ प्रभास राज घनघोरिया सहित ग्राम पंचायत के सभी सचिवों एवं रोजगार सहायकों द्वारा मंत्री जी का जोरदार स्वागत किया गया। मंत्री जी का स्वागत करने के लिए रविवार को भारी तेज धूप होने के बाद ही हजारों लोग उनके स्वागत के लिए दो से तीन घंटे खड़े रहे, और मंत्री जी के पहुंचते ही स्वागत किया गया।

## रैकवार माझी समाज ने विधायक राकेश गिरी को सौंपा ज्ञापन



टीकमगढ़, देशबन्धु। रविवार के दिन भाजपा कार्यालय में मध्य प्रदेश माझी जनजाति संयुक्त संघर्ष समिति द्वारा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के समस्त रैकवार माझी समाज के लोग मौजूद रहे।

आयोजित बैठक में मुख्य अतिथि स्वर्ूप टीकमगढ़ विधायक राकेश गिरी उपस्थित रहे। बैठक के माध्यम से रैकवार माझी समाज के पदाधिकारियों ने टीकमगढ़ विधायक राकेश गिरी को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपकर अपनी मांगों

को मुख्यमंत्री तक पहुंचाने की बात कही। विधायक राकेश गिरी ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी की जो भी मांगें हैं उन सभी को मेरे द्वारा मुख्यमंत्री तक पत्र के माध्यम से पहुंचाया जाएगा। इसके साथ ही आप सभी की मांगों को पूरा कराने का हर संभव प्रयास करूंगा। इस अवसर हल्काई रैकवार, सूरज रैकवार, उत्तम रैकवार, डालचंद्र रैकवार, भगवान दास रैकवार, हीरा लाल केवट सहित रैकवार माझी समाज के गणमान्यजन मौजूद रहे।

## 5 हजार का फरार इनामी आरोपी गिरफ्तार



दिगौड़ा, देशबन्धु। थाना पुलिस द्वारा रविवार 3 सितम्बर को 5 हजार रुपए के फरार इनामी आरोपी को पकड़ने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने दुष्कर्म, पॉक्सो एक्ट व एससीएसटी एक्ट के आरोपी को छतरपुर जिले से गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी

नीरज लोधी ने जानकारी देते हुए बताया है कि दिगौड़ा थाना क्षेत्र के अंतर्गत दुष्कर्म, पॉक्सो एक्ट व एससीएसटी एक्ट के एक मामले में आरोपी पिछले कई महीनों से फरार चल रहा था। आरोपी के बारे में सूचना मिलने पर तत्काल पुलिस टीम को साथ लेकर परा चौकी तिगैला जिला छतरपुर से आरोपी सत्यम यादव पिता विन्दावन यादव उम्र 19 साल निवासी वीरऊ को गिरफ्तार कर जिला न्यायालय में पेश किया गया है। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी नीरज लोधी, एसएसआई कल्याण सिंह, मुन्नालाल, प्रधान आरक्षक विजय सिंह, रंजीत सिंह, सादिक खान, मुकेश राय, प्रभु सिंह, आरक्षक सलमान, शैलेन्द्र, अजय, पंकज, हीरालाल व राजेश की अहम भूमिका रही।





# जन आशीर्वाद यात्रा भव्य शुभारंभ



यात्रा क्रं.	संभाग	प्रारंभ स्थान	दिनांक	मुख्य अतिथि
1	रीवा	चित्रकूट	3 सितंबर 2023	श्री जेपी नड्डा जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष
2	उज्जैन	नीमच	4 सितंबर 2023	श्री राजनाथ सिंह जी, रक्षामंत्री
3	जबलपुर	मंडला	5 सितंबर 2023	श्री अमित शाह जी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री
4	चंबल	श्योपुर	5 सितंबर 2023	श्री अमित शाह जी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री
5	इंदौर	खंडवा	6 सितंबर 2023	श्री नितिन गडकरी जी, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री

10,643

किमी की यात्रा

998

स्थान पर स्वागत

678

रथ सभा

211

मंच सभा

50

बड़ी सभा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्म जयंती 25 सितंबर के पावन अवसर पर

पांचों यात्राओं का भोपाल में समागम एवं कार्यकर्ता महाकुंभ होगा

जिसमें लाखों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे

**देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी**  
कार्यकर्ता महाकुंभ को संबोधित करेंगे

भारतीय जनता पार्टी, मध्य प्रदेश



**फिर इस बार भाजपा सरकार**

